दैनिक

कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

वर्ष 6, अंक 329 | भोपाल, सोमवार 11 मई, 2026 | ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष, नवमी 2083 | मूल्य 2 रुपए

दक्षिण कोरिया ने उतारा अपना सबसे... पेज 5

आज से खतरनाक रोग पंचक की... पेज 7

बेंगलुरू में पीएम मोदी के कार्यक्रम स्थल से कुछ ही दूरी पर मिला विस्फोटक

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी बेंगलुरु

बेंगलुरु में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम स्थल के पास जिलेटिन स्टिक मिलने से सुरक्षा एजेंसियों में हड़कंप मच गया। आर्ट ऑफ लिविंग सेंटर से कुछ ही दूरी पर मिली इन स्टिक्स के बाद पुलिस ने एक व्यक्ति को हिरासत में लिया है और घटना के पीछे की मंशा की गहन जांच कर रही है।

कर्नाटक पुलिस ने रविवार को बताया कि बेंगलुरु में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक कार्यक्रम में शामिल होने के कार्यक्रम स्थल के पास से कम से कम दो जिलेटिन स्टिक बरामद की गईं। इस घटना के बाद व्यापक सुरक्षा अलर्ट जारी किया गया और पुलिस एवं सुरक्षा एजेंसियों ने गहन जांच शुरू की। प्रधानमंत्री मोदी के आगमन से कुछ घंटे पहले बेंगलुरु के आर्ट ऑफ लिविंग सेंटर से लगभग तीन किलोमीटर दूर एक फुटपाथ के किनारे से जिलेटिन स्टिक बरामद की गईं। पुलिस ने बताया कि कार्यक्रम से पहले अनिवार्य स्वच्छता अभियान के दौरान ये स्टिक मिलीं।

इस घटना के बाद सुरक्षा एजेंसियां तुरंत सक्रिय हो गईं और मौजूदा बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था को और भी मजबूत कर दिया गया। जल्द ही, स्टिक को सुरक्षित करने और आसपास के क्षेत्र की दोबारा तलाशी लेने के लिए बम निरोधक एवं पहचान दस्ते (बीडीडीएस) को मौके पर तैनात किया गया। पुलिस ने बताया कि विस्फोटकों के स्रोत का पता लगाने और यह जानने के लिए व्यापक जांच शुरू कर दी गई है कि क्या उन्हें वीवीआईपी की आवाजाही के समय जानबूझकर रखा गया था। एक व्यक्ति को हिरासत में लिया गया है और पुलिस स्थानीय निर्माण संबंधी लापरवाही या जानबूझकर सुरक्षा खतरे सहित सभी संभावित पहलुओं की जांच कर रही है।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि इन विस्फोटकों के स्रोत और कार्यक्रम स्थल के पास इनकी मौजूदगी के पीछे के मकसद का पता लगाने के लिए आगे की जांच जारी है। इससे पहले दिन में, प्रधानमंत्री मोदी ने बेंगलुरु में आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन के 45वें स्थापना दिवस समारोह में भाग लिया। इस कार्यक्रम के दौरान, प्रधानमंत्री ने सेवा, आध्यात्मिकता और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने में आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन की भूमिका की सराहना की और पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व, युवा सशक्तिकरण और आंतरिक कल्याण के माध्यम से एक विकसित भारत के निर्माण के लिए सामूहिक प्रयासों का आह्वान किया।

पीएम मोदी बोले- पेट्रोल-डीजल का उपयोग कम करें, आज वर्क फ्रॉम होम की जरूरत, सोना न खरीदें

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी बेंगलुरु/हैदराबाद

पीएम नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि आज के समय में पेट्रोल, गैस और डीजल का इस्तेमाल कम करना होगा। पड़ोस में चल रहे युद्ध के असर से दुनियाभर में पेट्रोल-डीजल के दाम कई गुना बढ़ गए हैं। पीएम ने हैदराबाद में भाजपा की रैली में कहा- भारत पर इस वैश्विक संकट का असर ज्यादा है, हमारे पास तेल के बड़े कुएं नहीं हैं। आज हमें वर्क फ्रॉम होम जैसे उपायों की जरूरत है। जिन शहरों में मेट्रो है, वहां लोग मेट्रो का इस्तेमाल करें।

उन्होंने कहा कि पहले जब युद्ध होता था लोग सोना दान में दे देते थे। आज दान की जरूरत नहीं है लेकिन हमें आज ये संकल्प लेना होगा कि अगले 1 साल तक कोई भी कार्यक्रम हो, सोना न खरीदें। इससे विदेशी मुद्रा भी बचेगी। एक साल तक सोना न खरीदने की अपील- सोने के आयात में बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा खर्च होती है। देशहित में लोगों को एक साल तक सोना खरीदने और दान करने से बचना चाहिए। पेट्रोल-डीजल बचाएं, कारपूलिंग करें- अनावश्यक वाहन उपयोग कम करें, मेट्रो में सफर और कारपूलिंग करें। ज्यादा से ज्यादा लोगों को उसमें बिठाकर ले जाएं। खाद्य तेल की खपत कम करने पर जोर- हर परिवार अगर खाने के तेल का इस्तेमाल थोड़ा कम करे, तो इससे विदेशी मुद्रा की बचत होगी और लोगों की सेहत भी बेहतर रहेगी। रासायनिक खाद की जगह प्राकृतिक खेती अपनाएं- देश को रासायनिक उर्वरकों की खपत आधी करने का लक्ष्य रखना चाहिए और तेजी से प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ना चाहिए। विदेश यात्राएं टालने की अपील- वैश्विक हालात और महंगे ईंधन के कारण भारत पर आर्थिक दबाव बढ़ रहा है। ऐसे में शादियों, छुट्टियों और अन्य कारणों से विदेश यात्रा कुछ समय के लिए टालना देशहित में होगा।

ऐतिहासिक बीजिंग दौरा, ट्रंप और शी चिनफिंग की मुलाकात पर टिकी दुनिया की नजरें

अटकलों के बीच ताइवान नीति स्पष्ट की गई, ईरान पर US के नए प्रतिबंधों से तनाव बढ़ा

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

ट्रंप की यह यात्रा अमेरिका-इजराइल-ईरान युद्ध, होर्मुज जलडमरूमध्य की नाकाबंदी के कारण उत्पन्न वैश्विक ऊर्जा संकट और ताइवान समेत कई मुद्दों पर दोनों देशों के बीच बढ़ते तवाव के दौरान हो रही है। वैश्विक राजनीति के लिहाज से एक बड़े घटनाक्रम में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप 13 से 15 मई तक चीन की आधिकारिक यात्रा पर रहेंगे। चीन के विदेश मंत्रालय ने सोमवार को पुष्टि की कि यह यात्रा राष्ट्रपति शी चिनफिंग के विशेष निमंत्रण पर हो रही है। उल्लेखनीय है कि लगभग नौ वर्षों के लंबे अंतराल के बाद कोई अमेरिकी राष्ट्रपति चीन की धरती पर कदम रख रहा है। ट्रंप की यह यात्रा अमेरिका-इजराइल-ईरान युद्ध, होर्मुज जलडमरूमध्य की नाकाबंदी के कारण उत्पन्न वैश्विक ऊर्जा संकट और ताइवान समेत कई मुद्दों पर दोनों देशों के बीच बढ़ते तवाव के दौरान हो रही है।

अमेरिकी प्रधान उप प्रेस सचिव अन्ना केली ने रविवार को कहा कि ट्रंप बुधवार शाम बीजिंग पहुंचेंगे। हांगकांग के 'साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट' की खबर में केली के हवाले से कहा गया है कि अमेरिकी नेता बृहस्पतिवार को एक स्वागत समारोह और राष्ट्रपति शी चिनफिंग के साथ द्विपक्षीय बैठक में भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि दोनों नेता शुक्रवार को फिर मुलाकात करेंगे और चाय के दौरान द्विपक्षीय चर्चा करेंगे और फिर दोपहर के भोजन के दौरान भी विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि अमेरिका इस साल के अंत में चीनी नेता की यात्रा की मेजबानी करने की योजना बना रहा है। बातचीत में प्रस्तावित US-चीन व्यापार बोर्ड और निवेश बोर्ड पर हुई प्रगति भी शामिल होगी। दोनों देशों का लक्ष्य व्यापार के क्षेत्र में साझा प्राथमिकताओं की पहचान करना है। एयरोस्पेस, कृषि और ऊर्जा से जुड़े समझौतों पर चर्चा प्रमुखता से होने की उम्मीद है। अधिकारियों ने बताया कि इस दौरे के बाद, ट्रंप की योजना इस साल के आखिर में वाशिंगटन DC में शी और मैडम पेंग की वापसी यात्रा की मेज़बानी करने की है।

ताइवान पर वाशिंगटन के रुख से जुड़े सवालों का जवाब देते हुए, US अधिकारियों ने कहा कि नेता इस मामले पर नियमित रूप से चर्चा करते हैं, लेकिन उन्होंने नीति में किसी भी बदलाव की पुष्टि नहीं की। उन्होंने कहा, "राष्ट्रपति ट्रंप और जनरल सेक्रेटरी शी जिनपिंग के बीच ताइवान को लेकर लगातार बातचीत चल रही है। निश्चित रूप से, पिछली कुछ बार जब भी उन्होंने बातचीत की है, तो यह चर्चा का एक मुख्य बिंदु रहा है। इन चर्चाओं के परिणामस्वरूप US नीति में कोई बदलाव नहीं हुआ है। हमें भविष्य में भी US नीति में किसी बदलाव की उम्मीद नहीं है।"

यह आगामी बैठक पिछले हफ़्ते घोषित US के नए प्रतिबंधों के बाद हो रही है, जिनका निशाना ईरान के वित्तीय और ऊर्जा क्षेत्र हैं; इससे तेहरान और चीन के साथ उसके व्यापारिक नेटवर्क पर दबाव और बढ़ गया है। US के ट्रेजरी सेक्रेटरी स्कॉट बेसेंट ने X पर पोस्ट किया कि ईरान "वैश्विक आतंकवाद का सरगना" है और ट्रेजरी विभाग "Economic Fury" (आर्थिक रोष) नामक पहल के ज़रिए "आक्रामक" तरीके से कार्रवाई कर रहा है। उन्होंने आगे कहा, "हम इस शासन की धन जुटाने, उसे स्थानांतरित करने और वापस लाने की क्षमता को लगातार निशाना बनाते रहेंगे, और जो कोई भी तेहरान को प्रतिबंधों से बचने में मदद करेगा, हम उसके खिलाफ कार्रवाई करेंगे।"

किम जोंग की हत्या हुई तो नॉर्थ-कोरिया न्यूक्लियर अटैक करेगा

संविधान में नया प्रावधान जोड़ा, हमले में ईरानी सुप्रीम लीडर की मौत के बाद फैसला

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी प्योंगयांग

उत्तर कोरिया ने अपने संविधान और परमाणु नीति में बड़ा बदलाव करते हुए नया प्रावधान जोड़ा है। अब अगर देश के सुप्रीम लीडर किम जोंग-उन की हत्या हो जाती है या किसी विदेशी हमले के दौरान वे लीडरशिप करने की हालात में नहीं रहते, तो उत्तर कोरिया तुरंत परमाणु हमला करेगा। ब्रिटिश अखबार द टेलीग्राफ की रिपोर्ट के मुताबिक, यह बदलाव मार्च में तेहरान पर अमेरिका और इजराइल के हमलों के बाद किया गया। इन हमलों में ईरान के सुप्रीम लीडर अली खामेनेई और कई सीनियर ईरानी अधिकारियों की मौत हो गई थी। दक्षिण कोरिया की खुफिया एजेंसी के मुताबिक, इन हमलों ने प्योंगयांग को सोचने पर मजबूर कर दिया और उत्तर कोरिया को डर सताने लगा कि भविष्य में ऐसा 'डिकैपिटेशन स्ट्राइक' यानी टॉप लीडरशिप को खत्म करने वाला हमला उसके खिलाफ भी हो सकता है।

यह नया प्रावधान 22 मार्च को प्योंगयांग में शुरू हुए 15वीं सुप्रीम पीपुल्स असेंबली के पहले सत्र के दौरान अपनाया गया। बाद में दक्षिण कोरिया की नेशनल इंटेलिजेंस सर्विस ने सीनियर सरकारी अधिकारियों को इस बदलाव की जानकारी दी। नॉर्थ कोरिया की 15वीं सुप्रीम पीपुल्स असेंबली (संसदीय सत्र) के दौरान देश के संविधान में बदलाव किया गया। डिफेंस एक्सपर्ट्स का मानना है कि ईरान पर हुए हमलों ने उत्तर कोरिया की लीडरशिप को झकझोर दिया। हमलों की तेजी और सटीकता देखकर प्योंगयांग को लगा कि विदेशी शक्तियां किम जोंग-उन और उत्तर कोरियाई मिलिट्री लीडरशिप के खिलाफ भी इसी तरह का ऑपरेशन कर सकती हैं।

सियोल स्थित कूकमिन यूनिवर्सिटी में इतिहास और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रोफेसर आंद्रेई लांकोव ने मीडिया से कहा कि ईरान पर हुआ ऑपरेशन उत्तर कोरिया के लिए एक बड़ा चेतावनी संकेत बन गया। लांकोव ने कहा कि ईरान एक वेक-अप कॉल था। उत्तर कोरिया ने देखा कि अमेरिका और इजराइल के डिकैपिटेशन हमले कितने प्रभावी थे, जिन्होंने तुरंत ईरानी लीडरशिप के बड़े हिस्से को खत्म कर दिया। अब उत्तर कोरिया बेहद डरा हुआ होगा।

उन्होंने यह भी कहा कि संभव है ऐसी नीति पहले अनौपचारिक रूप से मौजूद रही हो, लेकिन अब इसे संविधान का हिस्सा बना दिया गया है, इसलिए इसका महत्व बढ़ गया है। तेहरान में 28 फरवरी को ईरानी सुप्रीम लीडर अली खामेनेई के दफ्तर पर हमला किया गया था, जिसमें उनकी मौत हो गई थी। तेहरान में 28 फरवरी को ईरानी सुप्रीम लीडर अली खामेनेई के दफ्तर पर हमला किया गया था, जिसमें उनकी मौत हो गई थी। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, ईरान के मुकाबले उत्तर कोरिया में ऐसा हमला करना कहीं ज्यादा मुश्किल होगा। उत्तर कोरिया दुनिया के सबसे बंद देशों में से एक है। वहां विदेशी डिप्लोमैट्स, सहायता कर्मियों और कारोबारियों पर कड़ी निगरानी रखी जाती है, जिससे खुफिया जानकारी जुटाना बेहद मुश्किल हो जाता है।

लोकल ईरानी मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इजराइली खुफिया एजेंसियों ने ईरानी नेताओं पर नजर रखने के लिए हैक किए गए ट्रैफिक कैमरों और डिजिटल सर्विलांस सिस्टम का इस्तेमाल किया था।

हालांकि प्योंगयांग में ऐसा करना बहुत कठिन होगा, क्योंकि उत्तर कोरिया में CCTV नेटवर्क सीमित है और वहां इंटरनेट सिस्टम पर सरकार का कड़ा कंट्रोल है।

किम जोंग-उन अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा को लेकर भी बेहद सख्त माने जाते हैं। वे आमतौर पर भारी हथियारों से लैस बॉडीगार्ड्स के बड़े ग्रुप के साथ यात्रा करते हैं और हवाई यात्रा से बचते हैं। इसके बजाय वे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दौरों के लिए बख्तरबंद ट्रेन का इस्तेमाल करते हैं।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबर: 9826035849, 9425006706

प्रदेश में 8 जिलों में बारिश का अलर्ट, आंधी चलेगी, भोपाल-इंदौर संभाग में तेज गर्मी रहेगी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मप्र में दो टर्फ और एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन एक्टिव होने से सोमवार को भी आंधी-बारिश का दौर रहेगा। मंडला, सिवनी समेत 8 जिलों में अलर्ट है। दूसरी ओर, भोपाल, इंदौर और उज्जैन संभाग में तेज गर्मी पड़ेगी। रविवार को रतलाम में पारा रिकॉर्ड 45.5 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया था। IMD भोपाल के अनुसार, सोमवार को बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडौरी और अनूपपुर में 30 से 40Km प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी और बारिश का अनुमान है। इसकी वजह टर्फ और चक्रवात का एक्टिव होना है। रविवार को तीन सिस्टम एक्टिव रहे। इससे इंदौर, भोपाल, नर्मदापुरम, सागर, जबलपुर और शहडोल संभाग के 18 जिलों में मौसम बदला रहा। कहीं बादल छाए तो कहीं बूंदाबांदी हुई। मौसम विभाग के अनुसार, सोमवार को भोपाल, इंदौर, उज्जैन, रतलाम, राजगढ़, नीमच, मंदसौर, छतरपुर, भिंड, मुरैना, श्योपुर, दतिया, शिवपुरी, अशोकनगर और शाजापुर में तेज गर्मी पड़ेगी। रविवार को प्रदेश के कई शहरों में तेज गर्मी पड़ी। रतलाम में इस सीजन मई में पहली बार पारा 45.5 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। यहां लगातार दूसरे दिन प्रदेश में सबसे ज्यादा तापमान दर्ज किया गया। शाजापुर में 44 डिग्री, धार में 42.4 डिग्री, खंडवा में 42.1 डिग्री और नर्मदापुरम में 42 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज हुआ। रायसेन, नरसिंहपुर, सागर और गुना में पारा 40 डिग्री से अधिक रहा। प्रदेश के 5 बड़े शहरों में उज्जैन में सबसे ज्यादा 42.4 डिग्री तापमान दर्ज किया गया। भोपाल में 40.4 डिग्री, इंदौर में 41.9 डिग्री, ग्वालियर में 38.4 डिग्री और जबलपुर में 38.9 डिग्री सेल्सियस रहा।

मौसम विभाग ने 12 मई से प्रदेश में हीट वेव यानी लू का अलर्ट जारी किया है। इंदौर और उज्जैन संभाग के जिलों में लू चल सकती है। प्रदेश में 30 अप्रैल से आंधी-बारिश का दौर शुरू हो गया था। लगातार 11 दिन यानी 10 मई तक बारिश हुई। कभी वेस्टर्न डिस्टरबेंस का असर रहा तो कभी चक्रवात और टर्फ का। इसी वजह से मई के पहले सप्ताह में बारिश हुई।

गर्मी बढ़ने पर मौसम विभाग ने बचाव की एडवाइजरी जारी की है। लोगों से दिनभर पर्याप्त पानी पीने और शरीर को हाइड्रेट रखने की अपील की गई है। दोपहर में ज्यादा देर धूप में न रहें। हल्के रंग के सूती कपड़े पहनें। बच्चे और बुजुर्ग खासतौर पर ध्यान रखें। भोपाल में मई में तेज गर्मी के साथ बारिश का ट्रेंड भी रहा है। 2016 में तापमान रिकॉर्ड 46.7 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था। 2014 से 2023 तक हर साल मई में बारिश दर्ज की गई। 2021 और 2023 में 2 इंच से ज्यादा पानी गिरा था। इस बार भी मई में बारिश का अलर्ट है।

एससी-एसटी एक्ट के 5423 केस 5 साल से ज्यादा पुराने, जबलपुर-सागर में सबसे ज्यादा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मप्र में एससी-एसटी एक्ट के 5423 मुकदमे 5 साल से अधिक समय से लंबित हैं। प्रदेश की विभिन्न अदालतों में चल रहे इन मामलों में सबसे ज्यादा केस जबलपुर में हैं। यहां 909 प्रकरण लंबित हैं। जबकि सागर 842 केस के साथ दूसरे नंबर पर है। सबसे कम संख्या नर्मदापुरम, खंडवा और हरदा की है। यहां सिर्फ एक-एक केस 5 साल से ज्यादा समय से लंबित है।

पुराने मामलों की बढ़ती पेंडेंसी के चलते अब इन्हें जल्द सुलझाने के लिए मध्य प्रदेश सरकार जुट गई है। हाल ही में लोक अभियोजन संचालनालय भोपाल ने सभी संबंधित अधिकारियों को इन पुराने प्रकरणों को प्राथमिकता के आधार पर जल्द निपटाने के सख्त निर्देश जारी किए हैं। दूसरी ओर, प्रदेश के आलीराजपुर, अनूपपुर, बड़वानी, बुरहानपुर, दतिया, झाबुआ, सीहोर और श्योपुर जिलों में एससी-एसटी एक्ट से जुड़ा एक भी मामला 5 साल से ज्यादा पुराना नहीं है। इन जिलों में 5 से कम केस 9 जिले ऐसे हैं जहां 5 साल से ज्यादा समय से 5 से कम केस पेंडिंग हैं। कटनी में चार, टीकमगढ़, नीमच, मंदसौर, डिंडोरी, धार में दो-दो और नर्मदापुरम, खंडवा, हरदा में एससी-एसटी एक्ट का एक केस पांच साल से ज्यादा समय से लंबित है।

लोक अभियोजन संचालनालय के इस पत्र के बाद अब सभी जिलों में इन पुराने लंबित मामलों पर स्पेशल ड्राइव चलाई जाएगी। अभियोजन विभाग के अधिकारी अब अदालतों में इन मामलों की नियमित सुनवाई सुनिश्चित

करेंगे, गवाहों को कोर्ट में पेश करवाएंगे, दस्तावेज पूरे करवाएंगे और जहां संभव हो वहां समझौता या तथ्यों के आधार पर तेज फैसला दिलाने का प्रयास करेंगे। चूंकि ये मामले न्यायालय में विचाराधीन हैं, इसलिए अभियोजन पक्ष केवल सहयोगी भूमिका निभा सकता है। ऐसे में इन मामलों के जल्द निपटारे के लिए नियमित सुनवाई सुनिश्चित करने, गवाहों के बयान कराने, अतिरिक्त सबूत जुटाने के साथ ही जिन केसों में दोनों पक्ष राजी हैं वहां शांति से समझौते कराए जा सकते हैं। इसके साथ ही स्पेशल कोर्ट के जरिए ट्रायल में तेजी लाई जा सकती है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) ने 'क्राइम इन इंडिया 2024' रिपोर्ट जारी की है। रिपोर्ट में एमपी की स्थिति चिंताजनक बताई गई है। अनुसूचित जनजाति (ST) के खिलाफ अपराध के मामलों में मध्य प्रदेश देश में पहले नंबर पर है।

बेटियों का सम्मान, सारंगपुर का गौरवः सादानी

डॉ. प्रिया गुप्ता का पूर्व नपाध्यक्ष सादानी ने किया स्वागत

दैनिक कारखाने का सफर। सारंगपुर

शहर के वरिष्ठ समाजसेवी कृष्णगोपाल गुप्ता की सुपुत्री एवं शहर लाडली प्रिया गुप्ता ने चिकित्सा क्षेत्र में एक बडी उपलब्धि हासिल करते हुए एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त की है। प्रिया की इस सफलता से न केवल उनके परिवार में खुशी का माहौल है, बल्कि उन्होंने पूरे सारंगपुर क्षेत्र का नाम गौरवान्वित किया है। शनिवार को नगर के पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष रूपल प्रमोद सादानी ने प्रिया गुप्ता के डॉक्टर बनने की उपलब्धि पर उनके निवास स्थान पर पहुँचकर उनका भव्य स्वागत व सम्मान किया। श्रीमती सादानी ने कहा कि प्रिया जैसी बेटियाँ समाज के लिए प्रेरणा हैं, जो अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण से ऊँचे मुकाम हासिल कर रही हैं। सादानी ने कहा कि बेटियों की सफलता समाज की प्रगति का आईना है। बेटियों का सम्मान, सारंगपुर का गौरव हैं। डॉ. प्रिया ने अपनी मेहनत से यह सिद्ध कर दिया है कि लक्ष्य के प्रति दृढ़ निश्चय हो तो कोई भी मंजिल कठिन नहीं है। इस गौरवमयी उपलब्धि पर इष्ट-मित्रों, शुभचिंतकों और स्थानीय नागरिकों ने डॉ. प्रिया गुप्ता और उनके पिता कृष्णगोपाल गुप्ता को हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। उल्लेखनीय है कि डॉ. प्रिया गुप्ता की शैक्षणिक यात्रा शुरू से ही उपलब्धियों भरी रही है। उन्होंने कक्षा 10वीं और 12वीं में भी उत्कृष्ट अंक प्राप्त कर शहर का नाम रोशन किया था। उनकी इसी प्रतिभा को देखते हुए तत्कालीन नगर पालिका अध्यक्ष रूपल सादानी द्वारा उन्हें पूर्व में 5000 रुपये की प्रोत्साहन राशि और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया था।

ड्रग्स के साथ तस्कर गिरफ्तार, 4 लाख की ड्रग्स जब्त, ग्राहक तलाशते समय पुलिस ने पकड़ा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल की हनुमानगंज थाना पुलिस ने 37 ग्राम एमडी ड्रग्स के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। जब्त माल की कीमत करीब चार लाख रुपए बताई जा रही है। पुलिस के मुताबिक, मुखबिर से सूचना मिली थी कि एक संदिग्ध व्यक्ति भोपाल रेलवे स्टेशन के पास एमडी ड्रग्स लेकर ग्राहक की तलाश कर रहा है। इसके बाद पुलिस टीम ने घेराबंदी कर किरण लॉज के पास से संदिग्ध को पकड़ लिया। मौके पर तलाशी लेने पर उसके पास से 37 ग्राम

एमडी ड्रग्स बरामद हुई, जिसकी कीमत करीब चार लाख रुपए आंकी गई है। पुलिस ने आरोपी की पहचान बरखेड़ी, जहांगीराबाद निवासी अबरार खान पिता स्व. मुस्ताफा खान (50) के रूप में की है। आरोपी के कब्जे से एमडी ड्रग्स जब्त कर उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस जांच में सामने आया है कि आरोपी के खिलाफ पूर्व में विभिन्न थानों में मारपीट, जुआ, आर्म्स एक्ट और एनडीपीएस एक्ट समेत करीब एक दर्जन मामले दर्ज हैं।

एक्टर अर्जुन रामपाल ने बाबा महाकाल के किए दर्शन, फिल्म `धुरंधर' से चर्चा में रहे अभिनेता, गायिका इशिता

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

फिल्म अभिनेता अर्जुन रामपाल ने रविवार को श्री महाकालेश्वर मंदिर में बाबा महाकाल के दर्शन किए। वे सुबह करीब 4 बजे मंदिर पहुंचे और लगभग दो घंटे नंदी हॉल में बैठकर भस्मारती में शामिल हुए। इस दौरान वे शिव साधना में लीन दिखाई दिए।

चांदी द्वार पर किया दर्शन और पूजन आरती के बाद अभिनेता ने चांदी द्वार पर माथा टेककर भगवान महाकाल का आशीर्वाद लिया। इसके बाद पंडितों द्वारा विधि-विधान से देहरी पूजन कराया गया।

मंदिर प्रशासन ने किया स्वागत मंदिर प्रबंध समिति की ओर से उप प्रशासक एस.एन. सोनी ने अर्जुन रामपाल का 'महाकाल' लिखे दुपट्टे से स्वागत किया। अर्जुन रामपाल ने मंदिर व्यवस्थाओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि यहां बहुत बेहतरीन व्यवस्थाएं हैं। उन्होंने सिंहस्थ की तैयारियों का भी जिक्र किया।

अर्जुन रामपाल ने फिल्म "धुरंधरः द रिवेंज" में पाकिस्तानी मेजर इकबाल का किरदार निभाया था। वह इससे पहले भी 15 मार्च 2025 को एक कार्यक्रम के सिलसिले में उज्जैन आ चुके हैं। तब उनका पूजन पुजारी यश पुजारी द्वारा कराया गया था। इस बार भी वे सफेद कुर्ते में नजर आए।

इशिता विश्वकर्मा ने भी किए दर्शन इसी दौरान गायिका इशिता विश्वकर्मा ने भी भस्म आरती में दर्शन किए। मंदिर प्रशासन ने उनका भी स्वागत किया। इशिता विश्वकर्मा ने अपने 24वें जन्मदिन पर बाबा महाकाल का आशीर्वाद लिया।

इशिता ने कहा कि वे मध्यप्रदेश की बेटी हैं और जबलपुर की रहने वाली हैं। उन्होंने मंदिर की व्यवस्थाओं के लिए आभार व्यक्त किया और कहा कि उनकी भगवान महाकाल में गहरी आस्था है। इस दौरान उन्होंने मंदिर परिसर में भजन भी प्रस्तुत किया- "मन मेरा मंदिर, शिव मेरी पूजा, शिव से बड़ा नहीं कोई दूजा।"

न्यायिक आयोग करेगा जबलपुर क्रूज हादसे की जांच

हाई कोर्ट के रिटायर्ड जस्टिस संजय द्विवेदी बने चीफ, तीन माह में देनी होगी रिपोर्ट

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राज्य सरकार ने जबलपुर क्रूज हादसे की न्यायिक जांच के आदेश जारी कर दिए हैं। इसके लिए हाई कोर्ट के रिटायर्ड जज संजय द्विवेदी की अध्यक्षता में एक सदस्यीय जांच आयोग बनाया है। सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा रविवार को जारी अधिसूचना के अनुसार, यह आयोग राज्य शासन जांच आयोग अधिनियम, 1952 की धारा 3 के तहत काम करेगा। आयोग को 3 महीने के भीतर 5 बिंदुओं पर जांच करके अपनी रिपोर्ट देनी होगी।

बता दें कि जबलपुर के बरगी डैम में 30 अप्रैल को क्रूज डूबने से 13 लोगों की जान चली गई थी। इनमें 8 महिलाएं, 4 बच्चे और एक पुरुष शामिल हैं। करीब 60 घंटे के रेस्क्यू के बाद पानी से सभी शव निकाले जा सके थे।

इन बिंदुओं पर होगी जांच-

- कारण और जवाबदेही: हादसे के वास्तविक कारणों की जांच करना और इसके लिए जिम्मेदार व्यक्तियों/अधिकारियों का निर्धारण करना।
- बचाव कार्य की समीक्षा: दुर्घटना के दौरान और उसके बाद किए गए बचाव उपायों और राहत कार्यों की पर्याप्तता की समीक्षा।
- सुरक्षा ऑडिट: प्रदेश में संचालित सभी नौकाओं, क्रूज और जल क्रीड़ा गतिविधियों का ऑडिट करना। इनलैंड वेसल्स एक्ट, 2021 और एनडीएमए की गाइडलाइंस के अनुरूप प्रमाणन की व्यवस्था देखना।
- मानक प्रक्रिया (SOP): भविष्य में ऐसी गतिविधियों के सुरक्षित संचालन और रखरखाव के लिए एक समान मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) तैयार करना।
- त्वरित प्रतिक्रिया दल (QRT): जल परिवहन और पर्यटन वाले सभी स्थानों पर 'क्विक रिस्पांस टीम' के गठन की व्यवस्था सुनिश्चित करना।

हादसे के बाद मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जबलपुर

पहुंचकर दुर्घटना स्थल का निरीक्षण किया था। मृतकों के परिवार से भी मुलाकात की थी। सीएम के दौरे के बाद सरकार ने मामले में एक्शन लिया था। जिसमें क्रूज पायलट महेश पटेल, क्रूज हेल्पर छोटेलाल गोंड और टिकट काउंटर प्रभारी (FOA) बृजेंद्र की सेवाएं तत्काल प्रभाव से समाप्त की गई थीं।

वहीं, होटल मैकल रिसॉर्ट और बोट क्लब बरगी के मैनेजर सुनील मरावी को लापरवाही बरतने के कारण निलंबित किया गया था। रीजनल मैनेजर संजय मल्होत्रा को मुख्यालय अटैच कर विभागीय जांच शुरू की गई है। एक कमेटी भी बनाई गई है, जो हादसे की मुख्य वजह की जांच कर रही है।

6 मई को जबलपुर की कोर्ट ने बरगी डैम हादसे में क्रूज के पायलट और स्टाफ पर FIR के निर्देश दिए थे। न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी डीपी सूत्रकार की कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेकर कहा था- पायलट ने लापरवाही से क्रूज चलाया, जिससे हादसा हुआ और कई लोगों की मौत हो गई।

अदालत ने कहा था कि पायलट क्रूज की गतिविधियों से परिचित था, लेकिन वह उसमें सवार लोगों को डूबता छोड़कर सुरक्षित बाहर निकल गया। यह भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 106 और 110 के तहत अपराध है। यदि FIR और जांच नहीं हुई, तो भविष्य में भी क्रूज या नाव चलाने वाले लोग अनहोनी में यात्रियों को डूबता छोड़ सकते हैं। ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति हो सकती है।

भेल गांधी मार्केट में 13 साल बाद हुआ चुनाव, महेंद्र नामदेव `मोनू' बने नए अध्यक्ष

व्यापारी संघ चुनाव: 95 प्रतिशत से अधिक हुआ मतदान, महेंद्र ने 57 मतों के अंतर से नीरज इशरानी को हराया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राजधानी के प्रमुख व्यापारिक केंद्रों में से एक, बीएचईएल स्थित गांधी मार्केट व्यापारी संघ के चुनाव कराया गया। पिछले 13 वर्षों से लंबित इस चुनाव में व्यापारियों ने बढ़-चढकऱ हिस्सा लिया। अध्यक्ष पद के लिए हुए कड़े मुकाबले में महेंद्र नामदेव (मोनू) ने जीत हासिल कर मार्केट की कमान अपने हाथ में ली है। चुनाव अधिकारी गोपाल कृष्ण अग्रवाल की देखरेख में आयोजित हुई इस प्रक्रिया में मार्केट के कुल 202 मतदाता व्यापारियों में से 193 ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। महेंद्र नामदेव को 125 मत और नीरज इशरानी को 68 मत मिले। 57 वोटों से महेंद्र नामदेव विजयी रहे। निर्वाचन प्रक्रिया पूरी होने के बाद चुनाव अधिकारी ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष महेंद्र नामदेव को जीत का प्रमाण-पत्र सौंपा।

मार्केट के कायाकल्प का विजनः सीसीटीवी और पार्किंग सुधार प्राथमिकता

जीत के बाद नवनिर्वाचित अध्यक्ष महेंद्र नामदेव ने व्यापारियों का आभार व्यक्त करते हुए मार्केट के विकास के लिए अपना संकल्प पत्र दोहराया। उन्होंने कहा कि उनका मुख्य लक्ष्य मार्केट में 'एकता, सबका सम्मान और सबका विकास' है।

महेंद्र नामदेव का संकल्प पत्र

सुरक्षा एवं सौंदर्यीकरणः संपूर्ण मार्केट में सीसीटीवी कैमरे लगवाना, चारों तरफ रेलिंग गेट और बाउंड्री वॉल की

पुताई के साथ पौधरोपण करना।

बुनियादी सुविधाएंः पार्किंग क्षेत्र में डामरीकरण या पेवर ब्लॉक का कार्य, पानी की सुचारू व्यवस्था और यातायात सुधार।

धार्मिक व सांस्कृतिक आयोजनः माता मंदिर का निर्माण, नवरात्रि पर झांकी और साल भर छोटे-बड़े आयोजनों की निरंतरता।

पारदर्शिताः गार्ड और अन्य आयोजनों के लिए किए जाने वाले कलेक्शन का हिसाब पूरी तरह सार्वजनिक और पारदर्शी रखना।

रीडेवलपमेंटः शहर के अन्य आधुनिक बाजारों की तर्ज पर गांधी मार्केट का पुनर्विकास करना, ताकि व्यापार को बढ़ावा मिल सके और स्वच्छता में नगर निगम से प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया जा सके। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने भरोसा दिलाया कि वे सभी व्यापारियों को साथ लेकर भाईचारे के साथ मार्केट के उत्थान के लिए कार्य करेंगे।

वीआईपी कल्चर जनता के लिए परेशानी का कारण

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

चंद्रकांति आर्य

वीआईपी कल्चर नगरों और महानगरों में एक गंभीर समस्या बन गई है जिससे आम जनता को रोजाना काफी कठिनाई होती है हाल के दिनों में इस मुद्दे पर काफी चर्चा भी हुई है बड़े शहरों में वीआईपी संस्कृति से जुड़ी काफी दिक्कतें हैं जब भी किसी वीआईपी का काफिला निकलता है तो सुरक्षा कारणों से मुख्य सड़कों को 10 से 20 मिनट या उससे ज्यादा समय के लिए पूरी तरह बंद कर दिया जाता है। बड़े शहरों की पहले से ही व्यस्त सड़कों पर यह बॉटलनेक का काम करता है जिससे किलोमीटर लंबा जाम लग जाता है। इमरजेंसी सेवाओं पर भी असर पड़ता है अक्सर देखा गया है कि वीआईपी मूवमेंट के दौरान एंबुलेंस और फायर ब्रिगेड जैसी आपातकालीन गाड़ियां भी जाम में फस जाती है। जो जान माल के लिए जोखिम भरा हो सकता है।इससे समय की बर्बादी भी होती है ।वीआईपी कल्चर की वजह से दफ्तर जाने वालों और विद्यार्थियों का काफी समय सड़कों पर बर्बाद हो जाता है ।आम जनता में आक्रोश बढ़ जाता है लोकतंत्र में सड़कों पर सबका समान अधिकार होना चाहिए, ऐसा लोगों का मानना है। सुरक्षा प्रोटोकॉल के और सार्वजनिक सुविधाओं के लिए पुलिस को वीआईपी की सुरक्षा और आम जनता की सुविधा के लिए तालमेल बैठाना एक बड़ी चुनौती होती है। कई बार वीआईपी मूवमेंट के दौरान भारी वाहनों के प्रवेश पर रोक लगा दी जाती है। जिससे सप्लाई चैन और व्यापार पर भी असर पड़ता है। इन दिक्कतों को देखते हुए अब मांग की जा रही है की वीआईपी मूवमेंट के लिए कोई वैकल्पिक रास्ता निकाला जाए या तकनीकी का सहारा लेकर ट्रैफिक को बेहतरीन तरीके से मैनेज किया जाए। बड़े शहरों में वीआईपी आवाजाही के कारण लगने वाले ट्रैफिक जामो से जनता को होने वाली असुविधा एक गंभीर समस्या है ।सुरक्षा और सुगमता के बीच संतुलन बनाने के लिए कुछ व्यावहारिक विकल्प और सरकारी कदम इस तरह हो सकते हैं । कई प्रशासनिक और राजनीतिक कार्यों के लिए वीआईपी का भौतिक रूप से उपस्थित होना अनिवार्य नहीं है तो वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से यात्राओं की संख्या कम की जा सकती है। विकसित देशों की तर्ज पर सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत वीआईपी के लिए अन्य वैकल्पिक साधनों का उपयोग किया जा सकता है जिससे सड़कों पर कारों का काफिला कम हो। वीआईपी आवाजाही को पीक आवर्स जब लोग ऑफिस और बच्चे स्कूल जाते हैं, के बजाय ऐसे समय पर रखा जाए जब सड़कों पर ट्रैफिक का दबाव कम हो। सरकार द्वारा उठाए जाने वाले प्रभावी कदम स्मार्ट ट्रैफिक सिग्नल ट्रैफिक सिस्टम का उपयोग जो वीआईपी वहां के गुजरते ही तुरंत सामान्य ट्रैफिक को सुचारू कर दें । अस्पताल और वीआईपी मूवमेंट के लिए अलग लाइन या अंडरपास का निर्माण ताकि मुख्य मार्ग बाधित न हो वीआईपी मूवमेंट की जानकारी पहले से ही नेविगेशन एप्स, गूगल मैप्स और रेडियो पर देना ताकि जनता वैकल्पिक मार्ग चुन सके। सुरक्षा की समीक्षा कर काफिले में वाहनों की संख्याओं को न्यूनतम भी किया जा सकता है वैकल्पिक सुरक्षा मॉडल सुरक्षा एजेंसियों को जारी ट्रैफिक के बजाय नॉनस्टॉप मूवमेंट मॉडल पर काम करना चाहिए इसमें सड़कों को पूरी तरह बंद करने की बजाय केवल उस जगह के लिए रोका जाता है जब काफिला वहां से गुजर रहा हो और काफिला निकलते ही तुरंत ट्रैफिक खोल दिया जाता है इन कदमों से न केवल आम आदमी का कीमती समय बचेगा बल्कि ईंधन की खपत और प्रदूषण में भी कमी आएगी। बड़े शहरों की भाग दौड़ और वीआईपी संस्कृति से कई तरह की समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं बड़े शहरों में जब किसी विशेष व्यक्ति के लिए यातायात रोका जाता है या नियमों में ढील दी जाती है तो इसके परिणाम केवल असुविधाजनक नहीं बल्कि घातक होते हैं ,जब वीआईपी मूवमेंट के कारण ट्रैफिक रुकता है तो लाखों कामकाजी घंटो का नुकसान होता है। शहरों में अर्थव्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ता है। कई बार करोड़ का नुकसान भी होता है आपातकालीन सेवाओं में भी बाधाएं आती है। सबसे ह्रदयविदारक स्थिति तब होती है जब वीआइपी काफिले के कारण एंबुलेंस या फायर ब्रिगेड जाम में फंस जाती है किसी के सुरक्षा के लिए किसी और के जीवन को जोखिम में डालना इस शहरों की सबसे बड़ी विडंबना है घंटे जाम में फंसने से आम नागरिकों में झुंझलाहट और रोड रेज बढ़ता है। यह सामाजिक असंतोष की भावनाओं को जन्म देता है, जहां नागरिक खुद को दोयम दर्जे का महसूस करने लगता है। भविष्य के लिए एक नई राह हैं वीआईपी सुरक्षा और जनहित के बीच एक संतुलन सेतु बनाने की आवश्यकता है। भौतिक रूप से रास्ता रोकने की बजाय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करके डायनेमिक ग्रीन कॉरिडोर बनाया जाना चाहिए जिससे काफिला भी निकलता है और पीछे का ट्रैफिक भी चलता रहे। से हवाई और जल मार्ग का विकल्प भी ले सकते हैं । महत्वपूर्ण व्यक्तियों के आवागमन के लिए, हेलीकॉप्टर सेवाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए ताकि सड़कों पर दबाव कम हो और कार्यक्रमों को सुबह या शाम के विशेष समय के बजाय रात के समय या दोपहर में निर्धारित किया जाना चाहिए। प्रोटोकॉल में सादगी को अपनाना चाहिए, सुरक्षा जरूरी है लेकिन दिखावा नहीं। वीआईपी काफिलो में गाड़ियों की संख्या कम करना चाहिए। सायरन का न्यूनतम प्रयोग करना केवल ध्वनि प्रदूषण नहीं घटाएगा बल्कि जनता के मन में सम्मान भी जगाएगा। शहरों के असली वीआईपी यहां की आम जनता है जो हर परिस्थिति में इस शहर को चलाए रखती है। यदि प्रशासन और नीति निर्धारक तकनीक और संवेदनशीलता का सही मिश्रण अपनाए तो हम एक ऐसी व्यवस्था देख पाएंगे जहां सुरक्षा का अर्थ किसी की राह रोकना नहीं बल्कि सबकी राह आसान करना होगा। यह बदलाव केवल नीतियों में नहीं बल्कि हमारी राजनीतिक सोच में भी अनिवार्य है। देश में भले ही वीआईपी कल्चर को खत्म करने के लिए कई कदम उठाए गए हो लेकिन हकीकत आज भी आम जनता के लिए परेशानी का कारण बनी हुई है। सड़कों पर वीआईपी मूवमेंट के दौरान घंटे ट्रैफिक रोक दिया जाता है जिससे आम लोगों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ता है। सरकार समय-समय पर वीआईपी कल्चर खत्म करने की बात जरूर करती हैं लेकिन जमीनी स्तर पर उसका असर समिति नजर आता है। अब सवाल यह उठता कि आखिर कब तक आम आदमी विशेष अधिकार की कीमत चुकाता रहेगा ?यह विचारणीय है, इसके लिए वीआईपी सुरक्षा और जनहित के बीच एक संतुलन सेतु बनाने की आवश्यकता है।

भोपाल में हिंदू लड़की के साथ होटल में पकड़ाया, मुस्लिम युवक के मुंह पर गोबर-स्याही

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल में रविवार शाम को एक हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं ने एक होटल में ठहरे युवक और युवती को पकड़ लिया। मुस्लिम युवक के साथ मारपीट की गई। कार्यकर्ताओं ने उसके चेहरे पर स्याही और गोबर पोत दिया। अर्धनग्न कर पीटा और गोविंदपुरा पुलिस के हवाले कर दिया। जानकारी के मुताबिक, मामला गौतम नगर इलाके स्थित प्राइड होटल का है। हंगामे के बीच युवती ने पुलिस से किसी तरह की जबरदस्ती, दुराचार या गलत व्यवहार से इनकार किया। उसने कहा कि वह युवक के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रह रही है। हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं के मुताबिक उन्हें सूचना मिली थी कि होटल में एक मुस्लिम युवक और हिंदू युवती ठहरे हुए हैं। इसके बाद बड़ी संख्या में कार्यकर्ता होटल पहुंच गए। कार्यकर्ताओं ने युवक और युवती को कमरे से बाहर निकाल लिया। इस दौरान मौके पर मौजूद लोगों ने मामले को कथित 'लव जिहाद' से जोड़ते हुए विरोध शुरू कर दिया। युवक के साथ मारपीट की गई। कार्यकर्ताओं ने उसके चेहरे पर स्याही और गोबर पोत दिया। इसके बाद उसे अर्धनग्न कर दिया गया। पुलिस के अनुसार युवक की पहचान जहांगीराबाद निवासी 27 वर्षीय आरिफ खान पिता खलील मोहम्मद के रूप में हुई है। युवती अयोध्यानगर क्षेत्र की रहने वाली है। हंगामे और मारपीट की सूचना मिलते ही गोविंदपुरा थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने युवक और युवती को सुरक्षा में लेकर थाने पहुंचाया। घटना से 2 घंटे पहले युवक-युवती ने होटल में चेक इन किया था। थाने में पूछताछ के दौरान युवती ने बताया कि वह पिछले करीब पांच साल से आरिफ खान के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रह रही है। वह आरिफ के खिलाफ किसी तरह की कानूनी कार्रवाई नहीं चाहती। युवती ने यह भी स्पष्ट किया कि उसके साथ कोई जबरदस्ती या गलत व्यवहार नहीं हुआ है। उसने बताया कि पिछले दिनों युवक जेल चला गया था। वह इन दिनों जिस रूम में रह रही है, वहां बाहरी युवकों की एंट्री नहीं है। लिहाजा दोनों होटल के रूम में मिलने पहुंचे थे।

कई राज्यों में भूलसुधार करेगी भाजपा!

अब सवाल है कि भारतीय जनता पार्टी ने यह सबक लिया है कि राज्यों में मजबूत नेता की जरुरत है और तीन साल बाद होने वाले लोकसभा चुनाव में उसे वापस बहुमत हासिल करना है तो वह भूलसुधार कब करेगी? कई राज्यों में भाजपा को भूलसुधार की जरुरत महसूस हो रही है। खास कर राजस्थान और मध्य प्रदेश को लेकर भाजपा बहुत भरोसे में नहीं है। राजस्थान में पूर्ण बहुमत मिलने के बाद भाजपा ने भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री बनाया था और उसके साथ ही हुए चुनाव के बाद मध्य प्रदेश में मोहन यादव को कमान दी गई थी। लेकिन दोनों राज्यों में सरकार के कामकाज को लेकर सवाल उठ रहे हैं और दोनों मुख्यमंत्री राजनीतिक मैसेज बनवाने में भी सफल नहीं हुए हैं। राजस्थान में तो लोकसभा चुनाव में ही कमजोरी जाहिर हो गई थी। सोचें, 2019 में भाजपा ने राज्य की सभी 25 सीटें जीती थीं। भाजपा ने खुद 24 और एक सीट उसकी सहयोगी पार्टी ने जीती थी। कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली थी। लेकिन 2024 में कांग्रेस ने 12 सीटें जीतीं।

उसके बाद से ही इस बात की चर्चा शुरू हो गई कि राज्य में बदलाव की जरुरत है। मध्य प्रदेश में भाजपा जरूर सभी सीटें जीती लेकिन उसमें मुख्यमंत्री का कोई योगदान नहीं है। दूसरे, भाजपा को यह भी समझ में आ रहा है कि मोहन यादव के नाम से उसे हिंदी पट्टी में यादव वोट का लाभ नहीं हो रहा है। ओडिशा और छत्तीसगढ़ में भी भाजपा ने प्रयोग किया है लेकिन वहां को लेकर अभी ज्यादा चर्चा नहीं है। ध्यान रहे भाजपा आलाकमान को अगर लग जाए कि कोई फैसला गलत हो गया है तो उसे उसमें सुधार करने में समय नहीं लगता है। मिसाल के तौर पर उत्तराखंड को देख सकते हैं, जहां भाजपा ने त्रिवेंद्र सिंह रावत की जगह तीरथ सिंह रावत को मुख्यमंत्री बनाया लेकिन जब लाभ नहीं दिखा तो चार महीने में ही उनको बदल कर पुष्कर सिंह धामी को सीएम बनाया गया। उसके बाद धामी 2022 का चुनाव हार गए फिर भी उनको मुख्यमंत्री बनाया गया क्योंकि उनकी कमान में पार्टी ने चुनाव जीत लिया था। सो, कहा जा रहा है कि लोकसभा चुनाव की तैयारियों को ध्यान में रखते हुए भाजपा आलाकमान कुछ राज्यों में भूलसुधार पर विचार कर रहा है।

बंगाल में सुवेंदु युग का आरंभ!

संगठन के स्तर पर तृणमूल को चुनौती देना आसान नहीं था। सुवेंदु अधिकारी ने वह चुनौती भी दी और वैचारिक स्तर पर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा को मजबूती से स्थापित किया। सुवेंदु अधिकारी ने पश्चिम बंगाल के हिंदू मतदाताओं को यह भरोसा दिलाया कि इस बार भाजपा चुनाव जीतने जा रही है। इसके साथ ही उन्होंने यह भरोसा भी दिलाया कि चुनाव से पहले, चुनाव के दौरान और चुनाव के बाद कोई हिंसा नहीं होगी। पश्चिम बंगाल में राजनीति के नए युग का आरंभ हो गया है। सुवेंदु अधिकारी के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करते ही प्रदेश की राजनीति का मूल चरित्र बदल गया है। आने वाले दिनों में शासन व प्रशासन की मूल अवधारणा भी बदल जाएगी। इस निष्कर्ष का कारण हमको केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के उस भाषण में खोजना होगा, जो उन्होंने सुवेंदु अधिकारी के नेता चुने जाने के समय विधायक दल की बैठक में दिया था। उन्होंने कहा था कि एक सौ वर्षों की वैचारिक यात्रा के बाद यह लक्ष्य प्राप्त हुआ है। ध्यान रहे राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ की स्थापना का शताब्दी वर्ष चल रहा है। तभी अमित शाह के कहने का अर्थ यह था कि भारतीय जनता पार्टी और उसके पूर्ववर्ती भारतीय जनसंघ की स्थापना के बहुत वर्ष पहले से पश्चिम बंगाल में एक वैचारिक संघर्ष चल रहा था, जिसकी परिणति भारतीय जनता पार्टी को जीत के रूप में हुई है। इसलिए पश्चिम बंगाल की विजय और भाजपा का मुख्यमंत्री बनना दूसरे किसी भी राज्य की विजय से भिन्न है। यह सिर्फ एक राजनीतिक या चुनावी विजय नहीं है, बल्कि वास्तविक अर्थों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की विजय है। एक विचार की विजय है। इस विजय के पीछे हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के साथ साथ भारतीय जनता पार्टी का अनथक परिश्रम मुख्य कारक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की रणनीति का भी बड़ा हाथ है। इसके साथ ही सुवेंदु अधिकारी के संघर्ष का भी बड़ा योगदान है, जिसने भाजपा की इतनी बडी जीत सुनिश्चित की। सुवेंदु अधिकारी को 2021 के चुनाव में बहुत समय नहीं मिल पाया था। तभी बहुत उत्कृष्ट प्रदर्शन के बावजूद भाजपा उस समय चुनाव नहीं जीत पाई थी। इसके बाद भी वे लगातार पांच साल तक जमीन पर तृणमूल कांग्रेस के विरोध में लड़ते रहे। उनकी लड़ाई कई स्तरों पर थी। संगठन के स्तर पर तृणमूल को चुनौती देना आसान नहीं था। सुवेंदु अधिकारी ने वह चुनौती भी दी और वैचारिक स्तर पर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा को मजबूती से स्थापित किया।

यह भगवा सनातन का नहीं, मोदी-संघ-सत्ता का है!

1925 का दशहरा और स्थान नागपुर। तब लोगों की निगाहों में मोहिते बाड़ा का खंडहर भूतहा था। पर डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के पास और कोई जगह नहीं थी। सो, वहीं भगवा झंडा खड़ा कर उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नामक संगठन की पहली शाखा लगाई। वह अभिशप्त जगह थी। लेकिन न वहां के भाऊजी कावरे को भूतों का भय था और न उजड़े आंगन के श्राप पर विश्वास। तभी 20-25 लड़कों की उस पहली शाखा ने सनातन धर्म के गेरूआ ध्वज के मायने समझने की शायद जरूरत न समझी। संघ मुखपत्र 'ऑर्गेनाइजर' ने संघ के सौ सालों के बखान में लिखा है कि बाद में संघ की नियमित शाखा की खबर अंग्रेजों को हुई तो उन्होंने हेडगेवार के दोस्त और शाखा में आने वाले बच्चों का ख्याल करने वाले राजसाहेब लक्ष्मणराव भोसले को तलब किया। उनका जवाब था कि मेरे यहां अपने पूर्वज शिवाजी का झंडा फहराता है। वही झंडा ये भी शाखा में लगाते हैं और शिवाजी व समर्थ रामदास की वंदना करते हैं। मैं इसे गलत नहीं मानता। ऐसा ही मैं भी करता हूं और ये भी करते हैं। पर न अंग्रेज ने पूछा, न भोसले ने बताया, न पशु चिकित्सा के डॉ. हेडगेवार ने अपने स्वयंसेवकों के लिए लिखा कि जिस झडे के आगे वंदना कर रहे हैं, उसमें मातृभूमि से पहले सनातन धर्म, हिंदवी स्वराज है। हालांकि मैंने अंग्रेज-स्थापित कांग्रेस के शताब्दी वर्ष का भी अनुभव किया है, उसे पढ़ा-समझा है तो संघ को भी जाना समझा है पर कभी संघ के भगवा की परिभाषा नहीं पढ़ी। संघ के किसी विचारक या पुस्तक में भगवा रंग, भगवा झंडे की व्याख्या नहीं देखी। जैसे कि नेहरू के प्रिय राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने संविधान सभा में बताई और कांग्रेस ने उसे माना कि, "भगवा त्याग और निःस्वार्थता का प्रतीक है संभव है हेडगेवार, गोलवलकर ने मोटामोटी त्याग और निःस्वार्थता की सनातन जीवन पद्धति से जीवन जिया, लेकिन उन्होंने अपने स्वयंसेवकों के दिल-दिमाग में सनातन का अर्थ पैठाने के बजाय मात्र इतना ज्ञान दिया- लाठी और गणवेश धारण करो, गीत गाओ, कबड्डी खेलो और बस करते रहो इस गान के साथ पथ संचलन, "क़दम-क़दम बढ़ाए जा, तू क़ौम को मूर्ख-डफर (बकौल सीताराम गोयल) बनाए जा!"

जो हो, 1925 के उस अभिशप्त-भूतहा मोहिते बाड़े के भूतों का ही शायद कोई श्राप है, जो संघ के बने स्यवंसेवक नरेंद्र मोदी-अमित शाह का बनाया आज वह अभिशप्त भारत है, जो न शिवाजी का हिंदवी स्वराज लिए हुए है और न सनातन धर्म की पावनता लिए हुए! क्या होती है पावनता, पवित्रता? और क्यों यह सवाल? इसलिए कि पांच मई 2026 की सुबह मैंने भारत के इकोसिस्टम, अखबारों की ये बैनर हेडलाइंस देखी कि बंगाल हुआ भगवामय! या भगवा की आई सुनामी तो मन में सवाल उठा यह कौन सा भगवा? किसका भगवा? कैसा भगवा?

आगे बढ़ें, उससे पहले जानें कि वेद, उपनिषद, सनातन के शास्त्रीय ग्रंथों में और मंदिर के गेरुआ ध्वज, गेरुआ वस्त्र से क्या अर्थ है। भगवा नया शब्द है। उन लोगों द्वारा गढ़ा हुआ है, जो धर्म को बेचकर, धर्म के हवाले ठगी कर हिंदुओं को मूर्ख, भक्त, अंधविश्वासी बनाने की प्रक्रिया से जनित है। चाहे तो इसे संघ और भाजपा भले अपना ट्रेडमार्क कह सकते हैं।

जबकि सनातन धर्म के शास्त्रीय ग्रंथों का मूल शब्द हैं, काषाय (काषायवस्त्र), अरुण, गेरुआ, अग्निवर्ण, त्यागवस्त्र। सवाल है सनातन धर्म के शब्दकोष के इन शब्दों का भला क्या अर्थ है? पवित्रता, त्याग, वैराग्य, तप और धर्ममय जीवन का स्वधर्म, आचरण, व्यवहार। केवल इसी अर्थ के संदर्भ में वैदिक, उपनिषदिक, गीता, स्मृति और संन्यास परंपरा का गेरुआ रंग है। बंगाल के गेरुआ वस्त्रधारी स्वामी विवेकानंद का यह वाक्य भगवा के वायरस से अलग रहने वाले हर सनातनधर्मी, असल हिंदू को कंठस्थ याद रखना चाहिए, "This gerua robe is the flag of renunciation." "यह गेरुआ वस्त्र त्याग का ध्वज है।" "त्याग और सेवा ही भारत का राष्ट्रीय आदर्श है।" जिसने गेरुआ धारण किया है, अपने घर पर गेरुआ झंडा लगाया है, वह व्यक्ति, संस्था या मंदिर शुभ, पावन और शांतिदायी होना चाहिए।

मतलब यह कि न वह छप्पन इंची छाती दिखाता हुआ अहंकारी हो, न बुलडोजर लिए हुए हो। न उसका शरीर झूठ की सांसों से धड़कता हुआ हो और न झूठ-छल-ठगी की क्रूरताओं से भरा हो। और यदि कोई ऐसा है तो सनातन धर्म के लोगों जान लो, छल-कपट, लालची-झांसे से भरे शासन के दोषियों के लिए सनातन धर्म में यमराज ने विशसन तथा लालाभक्ष नाम के खास मगर क्रूर नरक बनाए हुए हैं।

नरेंद्र मोदी, अमित शाह कह सकते हैं यह सनातन धर्म की फिजूल बकवास है। हम भारत की भूमि को, बंगाल को पापमुक्त, मुसलमान-मुक्त बना दे रहे हैं। और इसके लिए भगवा की आड़ में ठगी का चाणक्य दर्शन, रंगा सियार वाला आचरण और सत्ता में वर्चस्वता ही असल राष्ट्रधर्म है, कौम धर्म है। इसलिए हम तो ऐसे ही राज करेंगे।

करें। पर तब गेरूआ पर, सनातनधर्मी हिंदुओं पर कम से कम भगवा झांसा न चस्पाएं।

बहरहाल, पते की बात। 1925 के दशहरे के दिन नागपुर की उस अभिशप्त जगह में भगवा रोपण से सनातन शब्दावली (ध्यान रहे, शब्द ब्रह्म है!) के अर्थ का जैसा अनर्थ हुआ है, उससे क्या सनातन से अलग भगवा धर्म की एक नई डिक्शनरी नहीं लिख देनी चाहिए?

-हरिशंकर व्यास

भाजपा के मजबूत क्षत्रपों को कमान!

भारतीय जनता पार्टी अब दूसरी तरह से लोगों को चौंका रही है। वह मजबूत क्षत्रप नेताओं को राज्यों में कमान दे रही है। बिहार में सम्राट चौधरी और पश्चिम बंगाल में शुभेंदु अधिकारी को मुख्यमंत्री बनाया गया। असम में हिमंत बिस्वा सरमा ही फिर से सीएम बनेंगे यह लगभग तय है। असल में पहले भाजपा के बारे में यह धारणा बनी थी कि वह किसी को भी मुख्यमंत्री बना सकती है। कहा जाने लगा था कि भाजपा पर्ची से निकाल कर सीएम के नाम तय कर रही है। राजस्थान में भजनलाल शर्मा और मध्य प्रदेश में मोहन यादव को सीएम बनाए जाने के बाद यह धारणा बनी थी। ओडिशा में भी भाजपा ने दिग्गज नेताओं को छोड़ कर मोहन चरण मांझी को बनाया और छत्तीसगढ़ में विष्णु देव साय को कमान सौंपी। उत्तर भारत में सबसे पहले इसकी शुरुआत तब हुई थी जब भाजपा मे हिमाचल प्रदेश में जयराम ठाकुर को मुख्यमंत्री बनाया था। भाजपा के बारे में बनी इस धारणा के कारण ही जब बिहार में उसका अपना सीएम बनाने की बारी आई तो ज्यादातर लोग कह रहे थे कि कोई चौंकाने वाला नाम होगा। भाजपा किसी को भी मुख्यमंत्री बना सकती है। सम्राट चौधरी के नाम को सिर्फ इस आधार पर खारिज किया जा रहा था कि उनके नाम की बहुत चर्चा हो रही है तो नरेंद्र मोदी और अमित शाह उनको नहीं बनाएंगे।

लेकिन अंततः उनके नाम पर मुहर लगी। कोई चौंकाने वाला नहीं आया। कोई पर्ची नहीं निकली। उसके बाद पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में भाजपा को बड़ी जीत मिली और पहला मुख्यमंत्री बनाने की बात आई तो शुभेंदु अधिकारी का नाम सबसे आगे था। लेकिन ऐसा कहने और मानने वाले बहुत से लोग थे कि उनके नाम की बहुत चर्चा हो रही तो वे नहीं बनेंगे। यह भी कहा जा रहा था कि भाजपा को अपने दम पर पूर्ण बहुमत मिला है और पहला मुख्यमंत्री बनना है तो पार्टी आरएसएस की पृष्ठभूमि वाले किसी पुराने नेता को मौका देगी। लेकिन बंगाल में तो खुद अमित शाह ने जाकर शुभेंदु अधिकारी को मुख्यमंत्री बनाने का फैसले पर मुहर लगवाई। अब असम में मुख्यमंत्री चुना जाना है तो यह तय है कि मौजूदा मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ही सीएम बनेंगे।

असल में भाजपा आलाकमान की रणनीति में यह बदलाव 2024 के लोकसभा चुनाव में लगे झटके की वजह से हुआ है पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा को 63 सीटों का नुकसान हुआ था और वह अपने दम पर बहुमत नहीं हासिल कर पाई थी। तभी 2024 लोकसभा चुनाव के बाद एक दिल्ली के अपवाद को छोड़ दें तो भाजपा ने हर जगह ऐसे व्यक्ति को मुख्यमंत्री बनाया, जिसका बनना तय माना जा रहा था। महाराष्ट्र में देवेंद्र फड़नवीस स्वाभाविक पसंद थे तो उनको बनाया गया। हरियाणा में तो भाजपा ने चुनाव ही लड़ा था नायब सिंह सैनी के नाम पर। उनको चुनाव से ठीक पहले मुख्यमंत्री बनाया गया था और उनके नाम पर चुनाव लड़ा गया था तो वे सीएम बने। इसी तरह बिहार में पार्टी को मौका मिला तो उसने स्वाभाविक पसंद माने जा रहे सम्राट चौधरी को बनाया। पश्चिम बंगाल में शुभेंदु अधिकारी बने और असम में सरमा बनेंगे। इसका यह अर्थ है कि भाजपा ने लोकसभा चुनाव में अपने मुख्यमंत्रियों की परफॉरमेंस का आकलन किया है। उसको भी समझ में आया है कि जनता के बीच लोकप्रिय और मजबूत सामाजिक आधार वाले नेता को मुख्यमंत्री बनाना आगे की राजनीति के लिए जरूरी है। यह भी समझ में आया है कि नरेंद्र मोदी का करिश्मा और अमित शाह के प्रबंधन के साथ साथ राज्यों में मजबूत नेतृत्व भी जरूरी है।

कमल भी अब नीलकमल है! काला है!

पांच मई 2026 के दिन अखबारों में एक और शीर्षक था, 'बंगाल में कमल खिला'! 'नया इंडिया' में भी था। पल भर के लिए मन में प्रतिक्रिया थी, कमल खिला या दलदल खिला? क्यों? इसलिए क्योंकि मैंने कमल फूल को सनातन धर्म के चश्मे से जाना है। वह चश्मा मोदी-शाह-भाजपा के चश्मे से एकदम विपरीत है। कैसे? नोट करें कि कमल केवल फूल नहीं है, सनातन धर्म की दार्शनिकता है। मूल का "पद्म" शब्द सनातन धर्म में दिव्यता, चेतना, अलिप्तता का पर्याय है। गीता में एक शब्द है, "पद्मपत्रमिवाम्भसा"। सोचें, इस दर्शन पर कि संसार कीचड़ है, जबकि जीवन जल है और आत्मा वह कमल, जो कीचड़, जल से बिना चिपके हुए उससे ऊपर है। संसार व जल में जीना है, लेकिन संसार से चिपके नहीं रहना है। संसार में रहकर भी उससे ऊपर उठी वह चेतना, जिससे मनुष्य आत्मिक पवित्रता में रहे।

और जान लें, सनातन धर्म के वेद, उपनिषद, गीता, पुराण सभी में कमल की यही महिमा है। अब तुलना करें भाजपा नाम की पार्टी के कमल से। भाजपा का कमल क्या "ब्लैक लोटस" की तरह नहीं खिला? एक तरफ लक्ष्मी कमल पर बैठती हैं। ब्रह्मा कमल से प्रकट होते हैं। तभी वह मनुष्य चेतना की सात्विकता, सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् का वह सहस्रार कमल है, जिसका अर्थ अलिप्तता है। शक्ति, लेकिन बिना लिप्सा के। सौंदर्य, लेकिन बिना अहंकार। और कीचड़ के बीच पवित्रता से ऊपर खिला हुआ

और नरेंद्र मोदी और अमित शाह ने इस पवित्र कमल का बारह वर्षों में कैसा कचूमर निकाला? इसे मात्र हेडलाइन बना दिया। भाषणों, भीड़ के नारों, आईटी सेल से झूठ का वह फूल बनाया है, मानो नकली "ब्लैक लोटस"। सो 'भगवा' शब्द की ही तरह कमल भी उलटाव से कीचड़ में धंसा हुआ है। सनातन धर्म का कमल दलदल में खिलता था, पर दलदल नहीं बनता था। कमल अब चुनाव के दलदल की परत पर, उसी में लिपटा, काला मगर अंहकारी जीत की तरह प्रकट होता है। भक्त इसलिए उस पर झूमते हैं कि भले काला हो, पर कमल तो है। और तो कोई विकल्प ही नहीं है! दलदल के तमाम तरह के कीड़े-मकोड़े इधर-उधर से आकर काले कमल को चाट रहे हैं! जीवन का

हर व्यवहार उस काले रंग, काले धागे में बांधे हुए है, जोकि शनि का रंग है, न कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश यानी सनातन त्रिदेव का!

सोचें, और सोचने की क्षमता न हो तो चैटजीपीटी से ही सवाल करके जानें कि सनातन सत्य में क्या गेरुआ का अर्थ था और कमल का अर्थ क्या? क्यों राजकुमार बुद्ध ने भी सूत्र (बौधायन धर्मसूत्र) दिया कि "अरुण-वस्त्र-धरः भिक्षाटनं चरेत्।" अर्थात "संन्यासी अरुण (भगवा/उषाकाल जैसे लाल-पीले) वस्त्र धारण करे।" आखिरकार यह तो सभी का अनुभव होका कि उगते सूर्य की गेरुआ लाली तपस्वी के उजियारे जीवन जैसी है। अंधकार हटाने वाली तो साथ ही चेतना भी जगाने वाली।

सनातन धर्म के अध्यात्म, दर्शन, धर्म में गेरुआ रंग और कमल के फूल की पवित्रता, पावनता का कभी भी, किसी ने भी भीड़ जुटाने, भीड़ को भड़काने, झूठ बोलने, अहंकार दिखलाने, लूट मचाने या भय, भूख, भक्ति को फैलाने में इस्तेमाल नहीं किया। ये दो शब्द हिंदुओं की नैतिकता, चाल-चेहरे-चरित्र के संस्कारों के प्रतीक थे।

मेरा मानना है, जैसे गेरुआ की जगह 'भगवा' जुमले से या सत्ता की भ्रष्टता से कमल की पवित्रता का प्रतीक अर्थ खत्म हुआ है, वैसे इक्कीसवीं सदी के 2026 के भारत और उसकी सनातन कौम के शब्द, संस्थाए अपने अर्थ, अपनी साख लगभग गंवा चुके हैं। अस्सी साल पार के एक सुधी बुजुर्ग से हाल में बात-बात में उनकी एक पीड़ा जाहिर हुई। उन्होंने स्वतंत्रता से पहले के समय को याद करते हुए कहा- मेरे बचपन में रेडियो आया था। उसकी तब साख थी कि रेडियो ने कहा है तो सत्य है। कस्बे में कलेक्टर कभी आता था, बोलता था तो सब विश्वास करते थे, उसके अंग्रेज कारिंदा होने के बावजूद। फिर छपा हुआ अखबार आया। लोगों के लिए उसका एक-एक शब्द मानो ब्रह्मवाक्य! ऐसे ही अदालत की साख थी। कोर्ट का फैसला होता था तो सवाल नहीं उठता था कि जज की नीयत क्या है। फिर नेता आए। नेहरू आते थे तो लोग अपने-आप सुनने जाते थे। विरोधी भी सभा में जाकर सुनता था। उनके कहे का मान था। नेहरू के चेहरे की साख थी, बात की साख थी। फिर प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, शंकराचार्य, साधु-संत थे। वे जो कहते थे, उसकी भी साख और आस्था भरपूर थी। पहला आम चुनाव बैलगाड़ी के साधन से भी लड़ा गया। उसके बाद के कई चुनावों तक चुनाव आयोग की साख पर कभी सवाल नहीं उठा। विपक्ष लगातार हारता हुआ भी उसका आदर करता था। ऐसे ही स्पीकर, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री- जितने चेहरे थे, वे सब विश्वसनीयता का चेहरा थे।

और देखते-सुनते वह समय आया, जो दलदल में धंसना शुरू हुआ, और आज का आलम यह है कि सभी साखविहीन हैं। किसी की भी क्रेडिबिलिटी नहीं बची। आप लोगों (पत्रकारों) की क्या साख है? सरकार, प्रधानमंत्री, कार्यपालिका, न्यायपालिका, चुनाव आयोग, चौथा खंभा, राजनीतिक दल, आरएसएस सहित तमाम एनजीओ, विश्वविद्यालयों से लेकर अस्पतालों, डॉक्टरों आदि सभी पर विश्वास-साख पैंदे पर हैं। न चेहरों की, न पद की साख है और न लोकतंत्र के उन शब्दों का अर्थ बचा है, जो संविधान में लिखे हुए हैं।

सोचें, यह कितना सही है? और इस स्थिति में पहुंचाने वाले दलदल का क्या नाम है?

-हरिशंकर व्यास

दक्षिण कोरिया ने उतारा अपना सबसे खतरनाक लड़ाकू विमान केएफ-21, राफेल से मुकाबला

एजेंसी सियोल

दक्षिण कोरिया ने अपना KF-21 बोरामे फाइटर जेट उतारा है। दक्षिण कोरिया ने पहली उड़ान के कुछ साल बाद ही औपारिक रूप से 4.5 जेनेरेशन के इस फाइटर को पेश किया है। विश्लेषकों का कहना है कि दक्षिण कोरिया के पहले स्वदेशी लड़ाकू विमान KF-21 को वैश्विक स्तर पर मुकाबला करने के लिए लंबा सफर तय करना है। खासतौर से अमेरिका, यूरोप और चीन के विमानों के साथ उसे प्रतिस्पर्धा करनी होगी। कोरियाई विमान की फ्रांस के राफेल जेट से लगातार तुलना की जा रही है। कोरियाई एक्सपर्ट ने अपने विमान के राफेल से बेहतर होने का दावा किया है साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट के मुताबिक, इस साल मार्च में कोरिया एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज (KAI) ने आधिकारिक तौर पर KF-21 बोरामे की पहली प्रोडक्शन यूनिट का अनावरण किया। इससे दक्षिण कोरिया उन चुनिंदा देशों के समूह में शामिल होने वाला आठवां मुल्क बन गया, जिन्होंने स्वदेशी रूप से उन्नत सुपरसोनिक लड़ाकू विमान बनाया है। अनावरण के साथ ही इस लड़ाकू विमान का बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू हो गया है। साल 2028 तक 40 'ब्लॉक I' यूनिट तैयार की जाएंगी। किंग्स सेंटर फॉर डिफेंस इकोनॉमिक्स एंड मैनेजमेंट के कार्यकारी निदेशक बेंस नेमेथ के अनुसार, KF-21 विदेशी निर्यात के मामले में प्रतिस्पर्धी हो सकता है। नेमेथ ने कहा कि दक्षिण कोरिया के लिए इसकी लागत, गुणवत्ता, डिलीवरी की गति और औद्योगिक सहयोग की पेशकश करने की तत्परता जैसे कारक इसके फायदे साबित हो सकते हैं।

नेमेथ ने तर्क दिया कि KF-21 का एक अधिक 'स्टेल्थ' (रडार की पकड़ से बाहर रहने वाला) संस्करण पांचवीं पीढ़ी के विमानों के साथ सीधे तौर पर मुकाबला कर सकता है। हालांकि इसका भविष्य आगे होने वाले अपग्रेड, मार्केटिंग और सियोल तथा संभावित बाजारों के बीच राजनीतिक संबंधों पर निर्भर करेगा। दक्षिण कोरिया KF-21 के एक्सपोर्ट को बढ़ाने की कोशिश कर रहा है

ताकि इसकी प्रति-यूनिट लागत कम हो सके। खासतौर से चीन, अमेरिका और यूरोप में मौजूद 4.5-जेनरेशन के विमानों से मुकाबला किया जा सके। अमेरिका और चीन के अलावा अब आठ देशों वाले इस खास ग्रुप में रूस, फ्रांस, स्वीडन, भारत और जापान शामिल हैं।। सांगजी यूनिवर्सिटी में मिलिट्री स्टडीज के प्रोफेसर चोई गी-इल का कहना है कि KF-21 का विकास अभी पूरा नहीं हुआ है। इसे चीनी J-10C और फ्रांसीसी राफेल जैसे 4.5-जेनरेशन के विमानों के बराबर आने में अभी काफी लंबा सफर तय करना है। हालांकि अभी से इसकी राफेल से तुलना की जाने लगी है। KF-21 दो सीटों वाला 4.5 जेनरेशन का फाइटर जेट है। इसे चौथी और पाचवीं पीढ़ी के विमानों के बीच में डिजाइन किया गया है। दक्षिण कोरिया का यह लड़ाकू विमान F-35 जैसे अमेरिका के स्टील्थ फाइटर के मुकाबले कम लागत में एडवांस क्षमताएं देता है। KAI का दावा है कि KF-21 विमान 4.5 पीढ़ी के जेट से बेहतर है। यह पांचवीं पीढ़ी के विमानों में वर्गीकृत होने से थोड़ा पीछे है। KF-21 जेट की अधिकतम रफ्तार मैक 1.8 यानी करीब 2200 किलोमीटर प्रति घंटा है, जो युद्ध में इसकी क्षमता बढ़ा देता है। KF-21 में लगा AESA रडार दूर से ही दुश्मन के विमानों को ट्रैक कर सकता है। इस खूबी से इसे लड़ाई में बढ़त मिलती है। यह जेट हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल और हवा से जमीन पर हमला करने वाले हथियार, दोनों को ले जा सकता है। KF-21 जेट में दो इंजन लगे हैं, जिससे इसे ताकत मिलती है। एक इंजन में दिक्कत आए तो दूसरा इंजन काम करता रहता है।

भारत के राफेल की ताकत भारतीय वायुसेना 4.5 जेनरेशन के फाइटर जेट राफेल का इस्तेमाल करती है। भारत ने फ्रांस की डसाल्ट एविएशन से जेट खरीदे हैं। राफेल एक बहुउद्देशीय लड़ाकू विमान है। मारक क्षमता और प्रदर्शन के कारण राफेल को दुनिया के बेहतरीन जेट में गिना जाता है। राफेल में एडवांस मिसाइल सिस्टम लगे हैं। इसमें मेटोर जैसी मिसाइल हैं, जो 150 किलोमीटर तक दुश्मन विमान को मार सकती है। राफेल में लगी स्कैल्प मिसाइल इसकी ताकत बढ़ाती हैं, जो करीब 300 किलोमीटर दूर तक जमीन पर सटीक हमला कर सकती है। राफेल में AESA रडार लगा है, जिसे RBE2-AA कहा जाता है। यह दूर से टारगेट की पहचान करते हुए उसे निशाना बना सकता है राफेल का स्पेक्ट्रा सिस्टम इस फाइटर जेट की खास ताकत है। यह इसे युद्ध की स्थिति में दुश्मन के रडार और मिसाइल से बचाता है।

राफेल की स्पीड मैक 1.8 यानी करीब 2200 किलोमीटर प्रति घंटा है। राफेल में भी दो इंजन लगे हैं, जो इसे ज्यादा सुरक्षित बनाता है।

खत्म होने वाली है जंग, रूस-यूक्रेन युद्ध पर पुतिन का बड़ा ऐलान, जानें किसे बताया पसंदीदा वार्ताकार

एजेंसी मॉस्को

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने शनिवार को कहा कि उन्हें लगता है कि यूक्रेन युद्ध अब खत्म होने वाला है। उन्होंने यह बयान मॉस्को में वर्षों बाद आयोजित सबसे छोटे विक्ट्री डे परेड में यूक्रेन पर जीत का संकल्प लेने के कुछ ही घंटों बाद दिया। पुतिन ने पत्रकारों से रूस-यूक्रेन युद्ध के बारे में बात करते हुए कहा, "मुझे लगता है कि यह मामला अब अपने अंत की ओर बढ़ रहा है।" यह युद्ध दूसरे विश्व युद्ध के बाद से यूरोप का सबसे घातक संघर्ष है। उन्होंने यह भी कहा कि वह यूरोप के लिए नई सुरक्षा व्यवस्थाओं पर बातचीत करने को तैयार होंगे, और उनके पसंदीदा वार्ताकार जर्मनी के पूर्व चांसलर गेरहार्ड श्रोडर होंगे। क्रेमलिन ने कहा है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन की मध्यस्थता से चल रही शांति वार्ता फिलहाल रोक दी गई है। पुतिन ने बार-बार यह संकल्प लिया है कि वे तब तक लड़ते रहेंगे जब तक रूस के युद्ध के सभी विभिन्न उद्देश्य हासिल नहीं हो जाते। मॉस्को इस युद्ध को "विशेष सैन्य अभियान" कहता है। रूस ने 2022 में यूक्रेन पर आक्रमण की शुरुआत की थी। इस युद्ध ने रूस और पश्चिमी देशों के संबंधों में 1962 के क्यूबा मिसाइल संकट के बाद से सबसे गंभीर संकट पैदा कर दिया है। पुतिन क्रेमलिन में युद्ध के कारणों पर अपना दृष्टिकोण रखने के बाद बोल रहे थे। उन्होंने युद्ध के लिए पश्चिमी नेताओं को दोषी ठहराया। पुतिन ने कहा कि उन्होंने 1989 में बर्लिन की दीवार गिरने के बाद वादा किया था कि नाटो का विस्तार पूर्व की ओर नहीं होगा, लेकिन बाद में उन्होंने यूक्रेन को यूरोपीय संघ के प्रभाव क्षेत्र में खींचने की कोशिश की। उनका यह बयान 9 मई के राष्ट्रीय अवकाश पर आयोजित विक्ट्री डे परेड के कुछ ही घंटों बाद आया। इस दिन द्वितीय विश्व युद्ध में नाजी जर्मनी पर सोवियत संघ की जीत का जश्न मनाया जाता है।

रूसी सैनिक यूक्रेन में चार साल से भी अधिक समय से लड़ रहे हैं। यह उस समय से भी अधिक है, जितने समय तक सोवियत सेनाएं दूसरे विश्व युद्ध में लड़ी थीं। रूस में उस युद्ध को 1941-45 का 'महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध' कहा जाता है। पुतिन के लिए यह युद्ध अब चिंता का सबब बनता जा रहा है। इस युद्ध में लाखों लोग मारे गए हैं, यूक्रेन के बड़े हिस्से तबाह हो गए हैं, और रूस की 3 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था पर भी बुरा असर पड़ा है। यूरोप के साथ रूस के रिश्ते शीत युद्ध के सबसे बुरे दौर के बाद से अब तक के सबसे खराब दौर में हैं।

ईरान ने `दलाल' पाकिस्तान के जरिए अमेरिकी प्रस्ताव का भेजा जवाब, क्या खत्म होगी मध्य पूर्व की जंग

एजेंसी तेहरान

ईरान की सरकारी न्यूज़ एजेंसी आईआरएनए (IRNA) के मुताबिक, युद्ध खत्म करने के अमेरिका के प्रस्ताव पर ईरान का जवाब मध्यस्थ पाकिस्तान के जरिए भेज दिया गया है। रविवार को आई रिपोर्ट में कहा गया कि प्रस्तावित योजना के तहत, बातचीत का पहला चरण दुश्मनी खत्म करने पर केंद्रित होगा। इसमें यह भी जोड़ा गया कि तेहरान का जवाब खाड़ी और होर्मुज जलडमरूमध्य में "समुद्री सुरक्षा" सुनिश्चित करने पर आधारित था। पाकिस्तान इस संदेश को अपने 'आका' अमेरिका तक पहुंचाएगा। इसके बाद अमेरिका अपनी प्रतिक्रिया देगा। वॉशिंगटन ने इस हफ्ते की शुरुआत में ईरान को 14-सूत्रीय प्रस्ताव भेजा था। इसकी शर्तों के तहत, ईरान को परमाणु हथियार न बनाने और कम से कम 12 साल तक यूरेनियम के सभी संवर्धन को रोकने पर सहमत होना होगा। उसे यूरेनियम का अनुमानित 440 किलोग्राम (970 पाउंड) का भंडार भी सौंपना होगा, जिसे उसने 60 प्रतिशत तक संवर्धित किया है। बदले में, अमेरिका धीरे-धीरे प्रतिबंध हटाएगा, ईरान

की अरबों डॉलर की ज़ब्त संपत्ति जारी करेगा, और ईरान के बंदरगाहों की अपनी नौसैनिक नाकेबंदी रोक देगा।

इस्लामाबाद में अल जजीरा के कमाल हैदर ने कहा कि पाकिस्तान ने ईरान का जवाब मिलने की पुष्टि की है। उन्होंने कहा, "पाकिस्तानी अधिकारी पुष्टि कर रहे हैं कि उन्हें अमेरिका के प्रस्ताव पर ईरान का जवाब मिल गया है।" उन्होंने कहा, "अब जब पाकिस्तान को यह मिल गया है, तो यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि इसे अमेरिका तक कब पहुंचाया जाता है, और फिर वॉशिंगटन की प्रतिक्रिया क्या होती है।" हैदर ने आगे कहा कि इस सौदे को मंजूरी दिलाने की बहुत जल्दी है, क्योंकि होर्मुज़ जलडमरूमध्य की लंबी नाकेबंदी का विश्व अर्थव्यवस्था पर, खासकर पाकिस्तान पर, गंभीर असर पड़ रहा है। ईरान ने अपने प्रमुख व्यापारिक केंद्र के तौर पर पहचाने जाने वाले खार्ग द्वीप में तेल रिसाव की खबरों का खंडन किया है। सेटेलाइट इमेज के आधार पर तेल लीक का दावा किया गया था। अब रॉयटर्स के मुताबिक, ईरान की ऑयल टर्मिनल्स कंपनी ने तेल लीक की खबरों को बेबुनियाद बताया है। दरअसल, सैटेलाइट इमेजरी में खाड़ी में देश के मुख्य तेल एक्सपोर्ट हब के पश्चिम में एक चिकनी परत दिखी थी इसी आधार पर रिसाव का दावा किया गया था।

ईरान ने होर्मुज में उतारी अपनी खास पनडुब्बी `फारस खाड़ी की डॉल्फिन', अमेरिकी जहाजों को करेगी ट्रैक, बढ़ेगा टकराव!

एजेंसी तेहरान

ईरान ने अपनी हल्की पनडुब्बियों को होर्मुज जलडमरूमध्य में तैनात करने का फैसला लिया है। फारस खाड़ी की डॉल्फिन कहे जाने वाली ये पनडुब्बियां दुश्मन के जहाजों और युद्धपोतों को निशाना बना सकती हैं। ईरान की ओर से यह ऐलान ऐसे समय किया गया है, जब होर्मुज स्ट्रेट में अमेरिका के साथ उसका तनाव चरम पर है। दोनों देशों के बलों में इस हफ्ते गोलाबारी के बाद होर्मुज के आसपास भारी तनातनी है। ऐसे में ईरान की ओर से पनडुब्बियों की तैनाती समुद्र में चल रहे टकराव को और ज्यादा बढ़ा सकती है। ईरान नेवी के कमांडर रियर एडमिरल शाहराम ईरानी की ओर से रविवार को ऐलान किया गया है कि स्वदेशी रूप से निर्मित हल्की पनडुब्बियां 'फारसी खाड़ी की डॉल्फिन' को होर्मुज जलडमरूमध्य में उतार दिया गया है। बयान में कहा गया है कि खतरों, क्षमताओं और ऑपरेशनल जरूरतों के आधार पर इन सबमरीन को तैनात और विस्तारित किया जा रहा हैं। भारत में ईरान के दूतावास के एक्स अकाउंट पर बताया गया है कि फारसी खाड़ी की डॉल्फिन हर समय अलर्ट पर रहती हैं और कार्रवाई के लिए तैयार रहती हैं। ये हल्की पनडुब्बियां होर्मुज जलडमरूमध्य के रणनीतिक जलक्षेत्र में समुद्र तल पर लंबे समय तक विश्राम (बॉटम रेस्ट) कर सकती हैं। इससे यह दुश्मन जहाजों पर नजर रख पाती हैं। ईरानी नेवी की ओर से बताया गया है कि उसकी ये पनडुब्बियां ना सिर्फ दुश्मन जहाजों को ट्रैक करती हैं बल्कि साथ ही जरूरत पड़ने पर हमला भी कर सकती हैं। दुश्मन के जहाजों को ट्रैक करने और उन्हें बेअसर करना इन पनडुब्बियों की क्षमता का ही एक अहम हिस्सा है, जो समुद्र में इनकी ताकत बढ़ाता है। बयान में कहा गया है कि ईरान की समुद्री प्रतिरोधक क्षमता का प्रदर्शन करने के लिए होर्मुज जलडमरूमध्य में 'डेना' डिस्ट्रॉयर पर मारे गए लोगों को समर्पित एक ऑपरेशन के दौरान ये पनडुब्बियां पानी की सतह पर आईं। कई सैन्य-गठन अभ्यास करने के बाद वे अपने मिशन को जारी रखने के लिए फिर से पानी के नीचे चली गईं। होर्मुज स्ट्रेट दुनिया का अहम समुद्री रूट है। खाड़ी देशों से दुनिया के बड़े हिस्से में इसी रास्ते से तेल-गैस पहुंचता है। अमेरिका और इजरायल के 28 फरवरी को किए गए हमलों के जवाब में ईरान ने यहां यातायात रोक दिया है। अमेरिका ने भी इसे ब्लॉक करते हुए दुनिया के जहाजों को इससे ना गुजरने देने का ऐलान कर दिया है। इसके चलते यह इलाका संवेदनशील बना हुआ है। ईरान और अमेरिका की नाकेबंदी ने दुनिया की एनर्जी सप्लाई को संकट में डाल दिया है। खाड़ी देशों के होर्मुज से होकर गुजरने वाले जहाजों की आवाजाही रुकने का सीधा असर तेल-गैस की कीमत पर हो रहा है। इसका सीधा असर साउथ एशिया और दुनिया के दूसरे हिस्से के साथ-साथ अमेरिकी बाजार पर भी हुआ है। भारत में भी इसका प्रभाव देखा गया है।

भारत,चीन और अमेरिका को बता दिया था, पुतिन ने यूक्रेन को दी थी चेतावनी का किया खुलासा

एजेंसी मॉस्को

रूस ने शनिवार को मॉस्को के रेड स्क्वायर पर विक्ट्री डे परेड का आयोजन किया। यह परेड पिछले कई दशकों में सबसे छोटा और शांत था। इसमें न तो रूसी हथियारों को प्रदर्शित किया गया और ना ही बड़ी संख्या में सैनिकों को। इसका प्रमुख कारण इस परेड पर यूक्रेनी ड्रोन हमलों की आशंका थी। हालांकि, परेड खत्म होने के एक दिन बाद रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा कि उन्होंने भारत, चीन और अमेरिका को बता दिया था कि अगर यूक्रेन, विक्ट्री डे परेड पर हमला करता है, तो इसका करारा जवाब दिया जाएगा। रूस 9 मई के समारोहों में बाधा डालने के प्रयासों की स्थिति में कीव पर व्यापक जवाबी हमला करने के लिए तैयार थाः "जैसा कि आप जानते हैं, रूसी रक्षा मंत्रालय ने पहले ही एक विशिष्ट बयान जारी किया था। यह कोई रहस्य नहीं है कि यदि कोई भी हमारे समारोहों में बाधा डालने का प्रयास करता है, तो हम जवाबी हमले करने के लिए मजबूर होंगे। मध्य कीव पर व्यापक

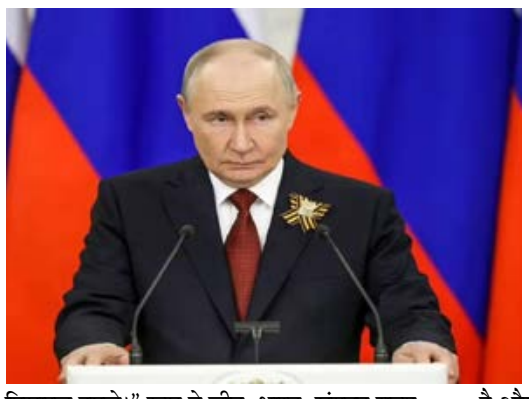

मिसाइल हमले।" रूस ने चीन, भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य साझेदारों के साथ 9 मई को कीव द्वारा किए गए हमलों के संभावित परिणामों और रूस की संभावित प्रतिक्रियाओं पर चर्चा कीः "हमने अपने मित्रों, सहयोगियों और साझेदारों को संभावित परिदृश्य की रूपरेखा प्रस्तुत की।" पुतिन ने पत्रकारों से कहा कि यूक्रेन ने अभी तक युद्धबंदियों की अदला-बदली के संबंध में कोई प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं किया है। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें विश्वास है कि यूक्रेन में संघर्ष अपने अंत की ओर अग्रसर है। रूसी नेता ने यह भी कहा कि वह व्लादिमीर जेलेंस्की से किसी भी देश में मिलने के लिए तैयार हैं, लेकिन केवल अंतिम समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के उद्देश्य से।

पुतिन ने कहा, "अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने दो अतिरिक्त दिनों के युद्धविराम और उन दो दिनों के दौरान युद्धबंदियों के आदान-प्रदान के लिए एक प्रस्ताव रखा है। हमने तुरंत इस पर सहमति व्यक्त की, क्योंकि यह एक न्यायसंगत प्रस्ताव है और नाजीवाद पर हमारी साझा विजय के प्रति सम्मान की भावना से प्रेरित है, और स्पष्ट रूप से एक विशिष्ट मानवीय प्रकृति का प्रस्ताव है।" राष्ट्रपतियों के बीच हुई हालिया बातचीत के दौरान, ट्रंप ने 9 मई की घटना के बारे में "बहुत सम्मानपूर्वक" बात की। उन्होंने युद्धविराम प्रस्ताव का समर्थन किया, लेकिन कीव की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई।

भारत परेशान न हो, ट्रंप प्रशासन के लिए पाकिस्तान एक वेश्या और मुनीर उसका दलाल

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल में पाकिस्तान पर कुछ ज्यादा ही मेहरबान हैं। उन्होंने कई मौकों पर पाकिस्तानी सेना प्रमुख असीम मुनीर को अपना फेवरेट फील्ड मार्शल बताया है। इतना ही नहीं, ट्रंप ने सार्वजनिक मंचों के पाकिस्तान की तारीफ की है और उसकी अहमियत को बढ़ावा दिया है। इस कारण भारत में ट्रंप के प्रति नाराजगी भी बढ़ी है। ट्रंप के इस बर्ताव ने भारत-अमेरिका पार्टनरशिप को मजबूत बनाने की कम से कम 25 साल की कोशिशों को सिस्टमैटिक तरीके से खत्म कर दिया है। हालांकि, अमेरिकी विदेश नीति के जानकारों का कहना है कि वास्तविकता इससे अलग है। अमेरिकन इंटरप्राइज इस्टीट्यूट में सीनियर फेलो माइकल रुबिन ने द संडे गार्डियन में लिखे एक लेख में कहा, पाकिस्तानी अधिकारियों को शायद लगता है कि वे मीडिएटर के तौर पर अपनी भूमिका का इस्तेमाल स्ट्रेटेजिक फायदे के लिए कर सकते हैं। शायद उन्हें लगता है कि ट्रंप उन्हें मिलिट्री टेक्नोलॉजी बेचकर भारत के क्वालिटेटिव और क्वांटिटेटिव मिलिट्री एडवांटेज को कम कर देंगे, या शायद मुनीर को लगता है कि वह ट्रंप को कश्मीर पर पाकिस्तान के फायदे के लिए "मीडिएट" करने के लिए फंसा सकते हैं।" उन्होंने आगे कहा, "ट्रंप का पहले कश्मीर पर भारत और पाकिस्तान के हजार साल पुराने विवाद का जिक्र इस बात को कन्फर्म करता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति इतिहास के स्टूडेंट नहीं हैं। जबकि पाकिस्तानी अधिकारियों को लगता है कि वे राष्ट्रपति की नासमझी का फायदा उठा सकते हैं, ऐसा लगता है कि मुनीर भी अमेरिकी राष्ट्रपति की तरह ही इतिहास के बारे में नासमझ हैं। जबकि मुनीर ट्रंप को हराने का जश्न मना रहे हैं, वह अमेरिका-पाकिस्तान रिश्तों के बुरे इतिहास को भूल जाते हैं।"

वॉशिंगटन के नजरिए से, पाकिस्तान शादी करने लायक कोई औरत नहीं है, बल्कि एक ऐसी वेश्या है जिसका इस्तेमाल करके उसे फेंक दिया जाता है। मुनीर तो बस इस धंधे का नया दलाल है। उन्होंने अमेरिका-पाकिस्तान संबंधों में आए उतार-चढ़ाव का जिक्र करते हुए कहा कि फील्ड मार्शल असीम मुनीर इतिहास को याद करने में नाकाम रहे हैं। शायद उसे लगता है कि वह ट्रंप को बेवकूफ बनाकर पाकिस्तान की रणनीतिक जरूरत को बनाए रख सकता है, लेकिन वह यह भूल जाते हैं कि अमेरिका से पाकिस्तान को जो भी फायदा मिलने की उम्मीद है, वह एक सीधी-सी वजह से बेमानी हैः अमेरिका पाकिस्तान का इस्तेमाल करता है और जैसे ही वॉशिंगटन को उसकी मदद की जरूरत नहीं रहती, वह उस देश से मुंह मोड़ लेता है। माइकल रुबिन ने कहा, "वॉशिंगटन के नजरिए से, पाकिस्तान शादी करने लायक कोई औरत नहीं है, बल्कि एक ऐसी वेश्या है जिसका इस्तेमाल करके उसे फेंक दिया जाता है। मुनीर तो बस इस धंधे का नया दलाल है। ट्रंप का कार्यकाल खत्म होने वाला है और उनके बाद जो भी आएगा—चाहे वह रिपब्लिकन हो या डेमोक्रेट—वह शायद एक बात पर जरूर सहमत होगाः पाकिस्तान पर भरोसा नहीं किया जा सकता, और न ही अमेरिका मुनीर से किए गए ट्रंप के किसी भी वादे का सम्मान करने के लिए खुद को बाध्य समझेगा।" उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तान को शायद लगता हो कि वह ट्रंप को बेवकूफ़ बना रहा है, लेकिन असलियत इसके ठीक उलट हो सकती है। पाकिस्तान को ट्रंप के वादों का फायदा कभी नहीं मिलेगा।

आरसीबी ने आखिरी गेंद पर हासिल की जीत, मुंबई इंडियंस प्लेऑफ की रेस से बाहर

एजेंसी रायपुर

आईपीएल 2026 के 54वें मुकाबले में मुंबई इंडियंस को आरसीबी के खिलाफ 2 विकेट से हार मिली। इस हार के साथ ही मुंबई इंडियंस के प्लेऑफ की उम्मीद खत्म हो गई है। शहीद वीर नारायण सिंह इंटरनेशनल स्टेडियम में पहले बल्लेबाजी करते हुए एमआई ने 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 166 रन स्कोरबोर्ड पर लगाए। आरसीबी ने आखिरी गेंद पर मैच को जीत लिया। टीम को जीत के लिए 6 गेंद पर 15 रन चाहिए थे। राज बावा ने 5 अतिरिक्त रन दिए। आखिरी गेंद पर रासिख सलाम ने दो रन बनाकर अपनी टीम को जीत दिला दी। इस जीत से आरसीबी की टीम पॉइंट्स टेबल में टॉप पर पहुंच गई है।

टॉस गंवाकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी मुंबई इंडियंस की शुरुआत अच्छी नहीं रही। भुवनेश्वर कुमार ने पारी के पहले ही ओवर में रेयान रिकेल्टन को महज 2 रन के स्कोर पर पवेलियन भेजा। इसके बाद रोहित शर्मा 10 गेंदों में 2 चौके और 2 छक्कों की मदद से 22 रन बनाकर आउट हुए। कप्तान सूर्यकुमार यादव बिना खाता खोले आउट हुए। 28 के स्कोर पर 3 विकेट गंवाकर मुश्किल में दिख रही एमआई की पारी को नमन धीर और तिलक वर्मा ने संभाला और चौथे विकेट के लिए 57 गेंदों में 82 रनों की अहम साझेदारी निभाई। नमन ने 32 गेंदों का सामना करते हुए 5 चौके और 2 छक्कों की मदद से 47 रन बनाए। वहीं, तिलक वर्मा ने 42 गेंदों में 57 रन बनाए। अपनी इस पारी में तिलक ने 3 चौके और 2 छक्के लगाए। विल जैक्स सिर्फ 10 रनों का ही योगदान दे सके, जबकि राज बावा 14 गेंदों में 16 रन बनाकर आउट हुए। आरसीबी की ओर से गेंदबाजी में भुवनेश्वर कुमार ने 4 ओवर में सिर्फ 23 रन देकर 4 बड़े विकेट निकाले।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी आरसीबी की शुरुआत अच्छी नहीं रही। विराट कोहली को दीपक चाहर ने गोल्डन डक पर पवेलियन भेजा। इसके बाद देवदत्त पडिक्कल भी 11 गेंदों पर 12 रन बनाकर आउट हुए। कप्तान रजत पाटीदार बल्ले से कुछ खास कमाल नहीं दिखा सके और वह 8 रन बनाकर आउट हुए। जैकब बेथेल अच्छी शुरुआत का फायदा उठाने में नाकाम रहे और 27 रन बनाने के बाद कॉर्बिन बॉश का शिकार बने। जितेश शर्मा 12 गेंदों में 18 रन बनाकर आउट हुए, जबकि टिम डेविड को कॉर्बिन बॉश ने पहली ही गेंद पर रयान रिकेल्टन के हाथों कैच कराकर पवेलियन भेजा। क्रुणाल पांड्या ने एक छोर से शानदार बल्लेबाजी की और 46 गेंदों में 73 रनों की लाजवाब पारी खेली। अपनी इस पारी में क्रुणाल ने 4 चौके और 5 छक्के लगाए। भुवनेश्वर कुमार 2 गेंदों में 7 रन बनाकर नाबाद रहे, जबकि रसिख सलाम ने नाबाद 3 रन बनाए और टीम को जीत दिलाकर लौटे। गेंदबाजी में एमआई की ओर से कॉर्बिन बॉश ने 26 रन देकर 4 विकेट चटकाए, जबकि दीपक चाहर ने 2 विकेट अपने नाम किए।

वारसॉ ग्रैंड चेस टूर, गुकेश छठे स्थान पर रहे, हंस नीमैन बने विजेता

एजेंसी नई दिल्ली

विश्व चैंपियन डी गुकेश को छठे स्थान से संतोष करना पड़ा जबकि अमेरिका के हेन्स मोके नीमैन ने अंत तक धैर्य बरकरार रखते हुए 'सुपर रेपिड एवं ब्लिट्ज' का खिताब जीत लिया। यह टूर्नामेंट 'ग्रैंड चेस टूर' का हिस्सा है। गुकेश ने 36 संभावित अंक में से 17 अंक हासिल करके अपना अभियान समाप्त किया। खिलाड़ियों ने नौ रेपिड और 18 ब्लिट्ज बाजियां खेलीं। हर रेपिड बाजी जीतने पर दो अंक और ब्लिट्ज बाजी जीतने पर एक अंक निर्धारित था। गुकेश ने रेपिड में नौ और ब्लिट्ज में आठ अंक जुटाए। हालात और भी खराब हो सकते थे लेकिन गुकेश ने आखिरी दौर में पोलैंड के डूडा यान-क्रिस्टोफ को हराकर वापसी की। गुकेश ने ग्रैंड चेस टूर के मुख्य टूर्नामेंट से नाम वापस ले लिया था और इस साल वे केवल रेपिड और ब्लिट्ज प्रारूपों में ही खेलेंगे। सबसे कम उम्र के विश्व चैंपियन गुकेश इस साल के अंत में नार्वे शतरंज टूर्नामेंट के अलावा अमेरिका के

जावोखिर सिंदारोव के खिलाफ विश्व चैंपियनशिप मुकाबला भी खेलने वाले हैं। गुकेश को आखिरी दिन तीन जीत मिलीं। उन्होंने अमेरिका के वेस्ली सो, नीमैन और डूडा को हराया। उन्हें चार हार का सामना करना पड़ा जिसमें सिंदारोव के खिलाफ शिकस्त भी शामिल है। सिंदारोव ने गुकेश के साथ खेले गए तीन मैच की व्यक्तिगत भिड़ंत में 2-1 के अंतर से जीत हासिल की। नीमैन ने आखिरी दो दौर जीते और टूर्नामेंट का समापन कुल 22.5 अंक के साथ किया। उन्हें ट्रॉफी के अलावा 50 हजार डॉलर का पहला पुरस्कार भी मिला। अंतिम दौर में नीमैन ने पोलैंड के राडोस्लाव वोज्टाजेक को हराया। अमेरिका के फाबियानो करुआना 22 अंक के साथ दूसरे स्थान पर रहे जो वेस्ली से एक अंक अधिक है। स्लोवेनिया के व्लादिमीर फेडोसेव 18 अंक के साथ चौथे स्थान पर रहे जबकि फ्रांस के अलिरेजा फिरोजा ने पांचवां स्थान हासिल किया। ग्रैंड चेस टूर का कारवां अब 'सुपर क्लासिक' टूर्नामेंट के लिए रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट की ओर बढ़ेगा और इस टूर्नामेंट में भारत की ओर से एकमात्र खिलाड़ी आर प्रज्ञानानंदा हिस्सा लेंगे।

भारतीय महिला टीम का शानदार प्रदर्शन, Shoot-Off में China को हराकर जीता खिताब

एजेंसी नई दिल्ली

दीपिका कुमारी, अंकिता भगत और कुमकुम मोहोद की भारतीय महिला रिकर्व टीम ने रविवार को यहां तीरंदाजी विश्व कप के दूसरे चरण में मेजबान चीन को 'शूट-ऑफ' में हराकर स्वर्ण पदक जीत लिया। रोमांचक अंतिम मुकाबले में भारत ने पहला सेट जीता, लेकिन चीन ने वापसी करते हुए मुकाबला बराबर कर दिया। निर्धारित चार सेट के बाद स्कोर बराबर रहने के कारण 'शूट-ऑफ' कराया गया।

भारतीय तिकड़ी ने निर्णायक क्षणों में संयम बनाए रखते हुए 5-4 (28-26) से जीत दर्ज की। अनुभवी दीपिका ने दबाव के बीच अंतिम 'शूट-ऑफ' तीर पर अहम नौ अंक जुटाकर भारत को 2021 के बाद पहला विश्व कप स्वर्ण पदक दिलाया। इससे पहले भारत ने सेमीफाइनल में रिकॉर्ड 10 बार के ओलंपिक चैंपियन दक्षिण कोरिया को हराकर बड़ा उलटफेर किया था। यह टूर्नामेंट में भारत का दूसरा पदक है।

इससे पहले, विश्व यूनिवर्सिटी खेलों के मौजूदा चैंपियन साहिल जाधव ने शनिवार को यहां तीरंदाजी विश्व कप के दूसरे चरण में पुरुष कंपाउंड स्पर्धा में कांस्य पदक जीता। भारत एक और पदक की दौड़ में बना हुआ है। सिमरनजीत कौर दिन में बाद में सेमीफाइनल में उतरेंगी और विश्व कप में अपना पहला पदक जीतने के लिए उन्हें एक जीत की जरूरत होगी।

भारतीय कुश्ती महासंघ का बड़ा बयान, हरियाणा के पहलवानों की रिकॉर्ड भागीदारी ने पक्षपात के आरोप झूठे साबित किए

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के अध्यक्ष संजय सिंह ने रविवार को कहा कि गोंडा में चल रहे राष्ट्रीय ओपन रैंकिंग टूर्नामेंट में हरियाणा के पहलवानों की भारी भागीदारी इस आरोप को खारिज करती है कि महासंघ राज्य के खिलाफ पक्षपात कर रहा है। उन्होंने हालांकि यह भी स्वीकार किया कि भारतीय कुश्ती अब भी डोपिंग की गंभीर समस्या से जूझ रही है, क्योंकि प्रतियोगिता स्थल पर इस्तेमाल की गई सिरिंज बरामद हुई हैं। इस तीन दिवसीय टूर्नामेंट के लिए करीब 1,400 पहलवानों ने पंजीकरण कराया है, जिनमें लगभग 80 प्रतिशत हरियाणा से हैं। हरियाणा को देश में पारंपरिक रूप से कुश्ती का सबसे मजबूत गढ़ माना जाता है। राष्ट्रीय ओपन रैंकिंग टूर्नामेंट घरेलू स्तर की एक महत्वपूर्ण प्रतियोगिता है, क्योंकि इसके जरिए राष्ट्रीय शिविरों और भविष्य की अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के चयन का रास्ता तय होता है। यह उन अनुभवी खिलाड़ियों के लिए भी बड़ा मंच है, जो रैंकिंग में पिछड़ने के बाद वापसी की कोशिश कर रहे हैं। इसी क्रम में 2019 विश्व चैंपियनशिप और 2023 एशियाई खेलों के रजत पदक विजेता दीपक पूनिया भी यहां प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। उनके साथ 125 किलोग्राम वर्ग में 2023 एशियाई चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता अनिरुद्ध गुलिया भी हिस्सा ले रहे हैं। यह मुद्दा इसलिए भी अहम है क्योंकि 2021 में तत्कालीन डब्ल्यूएफआई प्रशासन ने राष्ट्रीय चैंपियनशिप में किसी भी राज्य से एक से अधिक टीमों को अनुमति नहीं देने की नीति लागू की थी। इसे व्यापक तौर पर हरियाणा को निशाना बनाने वाला कदम माना गया था, क्योंकि राज्य परंपरागत रूप से अपनी मजबूत प्रतिभा के दम पर ए और बी दोनों टीमें उतारता रहा है। हरियाणा राज्य संघ ने उस समय इस फैसले की आलोचना करते हुए कहा था कि राज्य को जानबूझकर निशाना बनाया जा रहा है। संजय सिंह ने कहा कि हरियाणा भारतीय कुश्ती की रीढ़ बना हुआ है और महासंघ चाहता है कि हर राज्य से मजबूत भागीदारी हो, खासकर अंतरराष्ट्रीय स्तर के पहलवान तैयार करने वाले राज्यों से। डब्ल्यूएफआई के अनुसार, रैंकिंग टूर्नामेंट की शुरुआत खास तौर पर हरियाणा के पहलवानों को दूसरा मौका देने के उद्देश्य से की गई, ताकि प्रतिभाशाली खिलाड़ी खुद को साबित कर सकें और राष्ट्रीय स्तर पर अपनी दावेदारी बनाए रख सकें। सिंह ने कहा, "हरियाणा ने वर्षों से भारतीय कुश्ती में बड़ा योगदान दिया है। हम चाहते हैं कि वहां और पूरे देश में यह खेल और मजबूत हो। आंकड़े खुद इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण हैं कि डब्ल्यूएफआई हरियाणा के खिलाफ नहीं है। अगर भेदभाव होता, तो हरियाणा के पहलवान इतनी बड़ी संख्या में यहां नहीं आते।'' उन्होंने कहा, ''हरियाणा के पहलवान बड़ी संख्या में यहां जीतेंगे और राष्ट्रीय शिविर में वापसी का शानदार मौका हासिल करेंगे, जिससे उन्हें पूरे साल प्रशिक्षण से जुड़े लाभ मिल सकेंगे।" राष्ट्रीय ओपन रैंकिंग टूर्नामेंट के पहले दिन कई दिग्गज पहलवानों पर मुकाबले से पहले इंजेक्शन लेने के आरोप लगे हैं। प्रतियोगिता स्थल नंदिनी नगर के पुरुष शौचालय में इस संवाददाता को इस्तेमाल की गई कई सिरिंज मिलने के बाद यह मामला चर्चा में आया। सिंह ने कहा, "हम लगातार जागरूकता फैलाने और दोषियों को पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन यह सच है कि अभी और काम किए जाने की जरूरत है।

व्यापार

दाम बढ़ाओ-माल घटाओ, मिडिल ईस्ट संकट के बीच इसलिए बनी यह स्ट्रैटेजी

एजेंसी नई दिल्ली

रोजमर्रा की जरूरी चीजें महंगे होने की आशंका है। इनमें साबुन, डिटर्जेंट, बिस्किट, पैकेट वाला खाना और ड्रिंक्स शामिल हैं। बड़ी एफएमसीजी कंपनियां कच्चे तेल से जुड़ी महंगाई, पैकेजिंग की ज्यादा लागत और भू-राजनीतिक उथल-पुथल के कारण बढ़े हुए ईंधन खर्च की वजह से कीमतों में धीरे-धीरे बढ़ोतरी की तैयारी कर रही हैं। इन वजहों से कंपनियों का मुनाफा कम हुआ है। एफएमसीजी कंपनियों के अधिकारियों ने अपनी ताजा कमाई रिपोर्ट में संकेत दिया है कि या तो कीमतें बढ़ रही हैं या वे कीमतों को और बढ़ाने के लिए तैयार हैं। इन कंपनियों ने हाल ही में कीमतों में करीब 3 से 5 फीसदी की बढ़ोतरी की है। अधिकारियों ने इसकी वजह कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव से पैदा हुई महंगाई का दबाव, लॉजिस्टिक्स की ज्यादा कॉस्ट, करेंसी की कीमत में गिरावट और भू-राजनीतिक तनाव के बीच ग्लोबल सप्लाई चेन में रुकावटों को बताया है। यह दबाव खाने-पीने की चीजों, पर्सनल केयर, ड्रिंक्स और घरेलू सामान जैसे सभी सेक्टरों में महसूस किया जा रहा है। एफएमसीजी कंपनियां अपने मुनाफे को बैलेंस करने की कोशिश कर रही हैं। इसके लिए वे या तो कीमतें बढ़ा रही हैं या पैकेट का साइज

छोटा कर रही हैं; कुछ मामलों में दोनों किया जा रहा है। बिक्री की मात्रा बनाए रखने के लिए वे बाजार में 5, 10 या 15 रुपये वाले छोटे पैकेट (SKU) को बनाए रख रही हैं। हालांकि, एफएमसीजी कंपनियां इस असर को कम करने के लिए कीमतों में बदलाव की गुंजाइश और अंदरूनी लागत में कमी पर फोकस कर रही हैं। इनमें छूट और प्रमोशन में कटौती, इन्वेंट्री मैनेजमेंट को बेहतर बनाना और सप्लाई चेन को सुव्यवस्थित करना शामिल है। फिर भी आशंका है कि ग्राहकों को कीमतों में धीरे-धीरे बढ़ोतरी और पैकेट में सामान की मात्रा कम होने के रूप में इस बोझ का कुछ हिस्सा उठाना पड़ेगा। भारतीय एफएमसीजी कंपनी डाबर इंडिया के ग्लोबल सीईओ मोहित मल्होत्रा ने कहा कि कंपनी को इस वित्त वर्ष में पहले से ही 10 फीसदी की महंगाई का सामना करना पड़ रहा है। इस असर को कम करने के लिए उसने कीमतों में बढ़ोतरी शुरू कर दी है। मल्होत्रा ने कहा, 'हमने इस असर को कुछ हद तक कम करने के लिए कारोबार के अलग-अलग हिस्सों में कीमतों में 4 फीसदी की बढ़ोतरी पहले ही लागू कर दी है। हम लागत को सही करने के उपाय भी कर रहे हैं। भारत के कारोबार में महंगाई बढ़ने के बावजूद हमें इस साल डबल डिजिट ग्रोथ की उम्मीद है। यह कीमतों में बढ़ोतरी से होने वाली वैल्यू ग्रोथ और बिक्री की मात्रा में बढ़ोतरी (वॉल्यूम ग्रोथ) का मिला-जुला रूप होगी।' बेकरी प्रोडक्ट और बिस्किट बनाने वाली बड़ी कंपनी ब्रिटानिया ने भी कीमतों में जल्द बढ़ोतरी का संकेत दिया है। इसका मकसद भू-राजनीतिक घटनाओं के कारण ईंधन और पैकेजिंग की लागत में लगभग 20 फीसदी की बढ़ोतरी की भरपाई करना है। कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर और सीईओ रक्षित हरगवे ने कहा कि कंपनी दोनों विकल्पों पर विचार कर रही है - कीमतों में सीधी बढ़ोतरी और पैकेट में सामान की मात्रा में कमी। उन्होंने कहा, 'हां, चुनिंदा तौर पर हमें कीमतें बढ़ानी पड़ेंगी। इसमें ग्रामेज एडजस्टमेंट और कुछ ऐसे पैक शामिल हैं जिनकी कीमत 10 रुपये से ज्यादा है, उनमें किसी तरह की कीमत में बढ़ोतरी होगी।' पैक का साइज बड़ा होने पर कीमतें बढ़ेंगी।

पेट्रोल, गैस, डीजल का समझदारी से करें इस्तेमाल, पीएम मोदी ने अपने संदेश में दिया संकेत

एजेंसी नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को नागरिकों से बड़ी अपील की है। उन्होंने आह्वान किया है कि लोग पश्चिम एशिया में चल रहे संकट के बीच पेट्रोलियम उत्पादों का समझदारी से इस्तेमाल करें। हैदराबाद में एक कार्यक्रम के दौरान पीएम मोदी ने ईंधन की खपत में संयम बरतने की आवश्यकता पर जोर दिया। कारण है कि भारत बड़े पैमाने पर ईंधन आयात करता है। उन्होंने तेलंगाना में लगभग 9,400 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया। पीएम मोदी ने यह अपील ऐसे समय में की है जब पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी की अटकलें तेज हैं। तेल कंपनियों को सस्ता पेट्रोल और डीजल बेचने से हर रोज करीब 1,600-1,700 करोड़ रुपये का नुकसान हो रहा है। उन्होंने यह अपील ऐसे समय में की है जब भारत अमेरिका-ईरान युद्ध से पैदा हुए ऊर्जा संकट से जूझ रहा है। इस युद्ध के कारण होर्मुज स्ट्रेट की नाकेबंदी हो गई है। इससे जरूरी ईंधन की सप्लाई बाधित हुई है। होर्मुज तेल परिवहन का महत्वपूर्ण

ग्लोबल रास्ता है। पीएम मोदी ने कहा, '...आज समय की मांग यह भी है कि हम पेट्रोल, गैस, डीजल और ऐसी अन्य चीजों का बहुत संयम से इस्तेमाल करें। हमें आयातित पेट्रोलियम उत्पादों का इस्तेमाल केवल जरूरत पड़ने पर ही करना चाहिए। इससे न केवल विदेशी मुद्रा की बचत होगी, बल्कि युद्ध के नकारात्मक प्रभावों को कम करने में भी मदद मिलेगी।' मोदी ने रिन्यूएबल और वैकल्पिक ऊर्जा के क्षेत्र में भारत की तेज प्रगति पर भी रोशनी डाली। बताया कि सौर ऊर्जा उत्पादन के मामले में भारत दुनिया के अग्रणी देशों में से एक बनकर उभरा है। उन्होंने कहा कि आयातित ईंधन पर निर्भरता कम करने के प्रयासों के तहत पेट्रोल में इथेनॉल मिलाने के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व प्रगति हुई है। सरकार की बहुआयामी ऊर्जा रणनीति पर जोर देते हुए पीएम मोदी ने कहा कि सरकार का पहला फोकस एलपीजी की पहुंच सुनिश्चित करने पर था। अब यह फोकस सस्ती पाइप वाली गैस की सप्लाई का विस्तार करने की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने आगे कहा कि केंद्र सरकार ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाने के लिए सीएनजी-आधारित व्यवस्था को भी सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रही है। पीएम मोदी की ओर से यह अपील ऐसे समय में हुई जब कच्चे तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में तेज बढ़ोतरी का असर भारत की पेट्रोलियम कंपनियों पर भारी पड़ रहा है। पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के बीच इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (आईओसी), भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन (बीपीसीएल) और हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन (एचपीसीएल) जैसी सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम कंपनियां पिछले 10 सप्ताह से पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस एलपीजी की बिक्री पुराने दामों पर कर रही हैं। इससे उन्हें हर रोज 1,600-1,700 करोड़ रुपये का नुकसान (अंडर-रिकवरी) हो रहा है।

कई साल तक ऊंची रहेंगी तेल की कीमतें, दिग्गज अर्थशास्त्री की चेतावनी

एजेंसी नई दिल्ली

एशियाई विकास बैंक (ADB) के चीफ इकोनॉमिस्ट अल्बर्ट पार्क ने बड़ी चेतावनी दी है। उनका कहना है कि कच्चे तेल (क्रूड) की कीमतें आने वाले सालों में भी ऊंची रहने की आशंका है। मिडिल ईस्ट में लंबे समय तक तनाव जारी रहने से ऐसा होगा। उन्होंने आगाह किया है कि इससे एक ओर जहां भारत की ग्रोथ पर असर पड़ सकता है। वहीं दूसरी तरफ महंगाई बढ़ने का डर है। पार्क ने बताया, 'तेल की कीमतों में बढ़ोतरी की उम्मीद है। इसे देखते हुए हमारे नए अनुमान के मुताबिक, 2026 में औसत कीमत 96 डॉलर प्रति बैरल रहने के आसार हैं। 2027 में भी यह 80 डॉलर प्रति बैरल के ऊंचे स्तर पर बनी रह सकती है। लिहाजा, हमारा मानना है कि तेल की कीमतें लंबे समय तक ऊंची बनी रहेंगी।' एक्सपर्ट ने आगे बताया कि कैसे फ्यूचर मार्केट अब अगले साल भी कीमतों पर लगातार दबाव बने रहने का संकेत दे रहे हैं। उन्होंने कहा, 'हमने हमेशा स्पॉट मार्केट की कीमतों और नजदीकी वायदा बाजार की कीमतों के बीच एक तरह का प्रीमियम देखा है। कारण है कि अभी तेल की भारी कमी है।' पश्चिम एशिया में जारी संकट से 2026-27 में भारत की जीडीपी ग्रोथ 0.6% तक कम हो सकती है। इससे भारत की इकोनॉमिक ग्रोथ घटकर 6.3 फीसदी रह जाएगी। यही नहीं, इसके चलते महंगाई का दबाव तेजी से बढ़ सकता है। इससे पहले अप्रैल में एशियाई विकास बैंक ने अनुमान लगाया था कि भारत की अर्थव्यवस्था इस वित्त वर्ष में 6.9 फीसदी और अगले वित्त वर्ष में 7.3 फीसदी की दर से बढ़ेगी। इसे मजबूत घरेलू मांग का सहारा मिलेगा। महंगाई का अनुमान 4.5 फीसदी लगाया गया था। अपने संशोधित अनुमान के बारे में बताते हुए पार्क ने कहा, 'हमारा मानना है कि ग्रोथ (वित्त वर्ष 2026-27 में) 0.6 फीसदी कम रहेगी । यह हमारे मॉडल के अनुमान पर आधारित है। लेकिन, इसका अगले साल की ग्रोथ पर कोई निगेटिव इम्पैक्ट नहीं पड़ेगा। भारत अगले साल फिर से मजबूती से वापसी करेगा।'

आज से खतरनाक रोग पंचक की शुरुआत, 5 दिनों तक रहें अलर्ट बरतें ये सावधानी

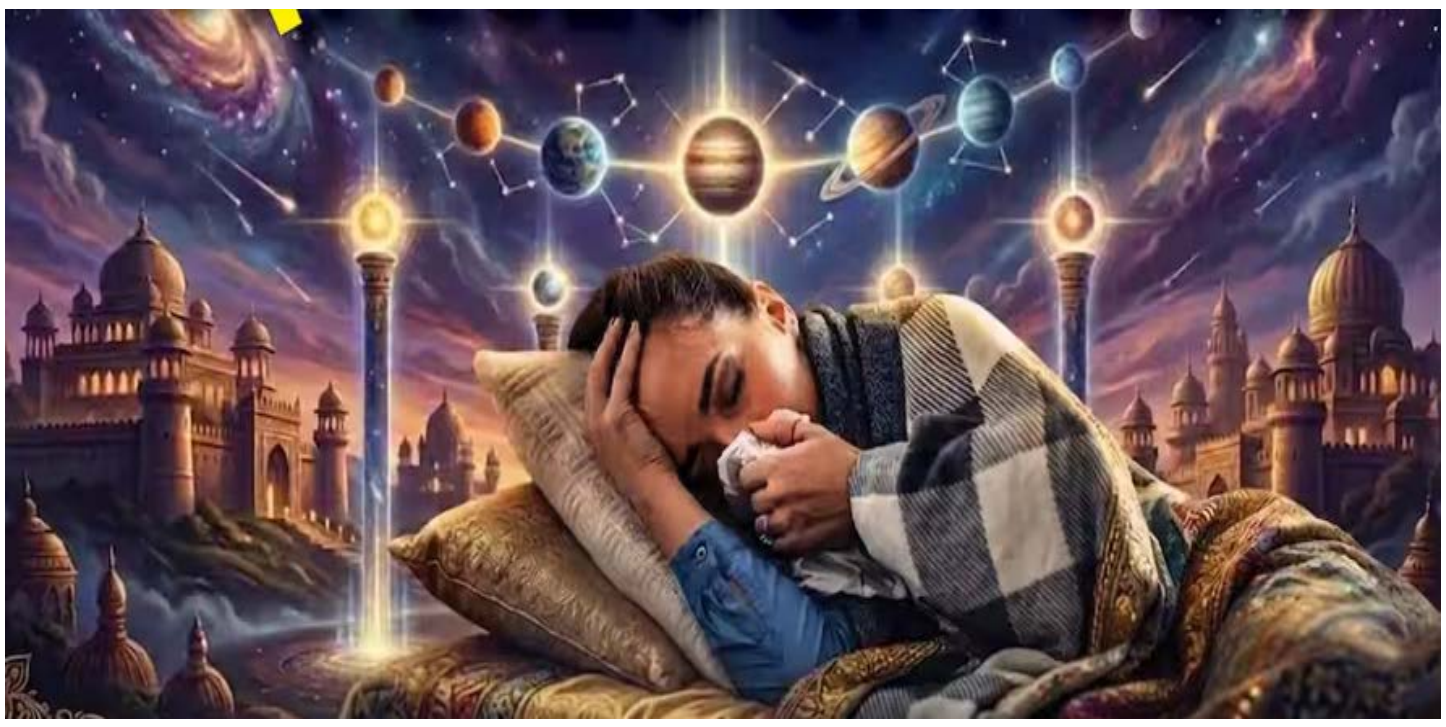

ज्योतष में पंचक को अशुभ काल माना गया है. दरअसल नक्षत्र चक्र में कुल 27 नक्षत्र होते हैं. इनमें अंतिम के पांच नक्षत्र दूतषत माने गए हैं. पंचक तब बनता है जब चंद्रमा कुंभ और मीन राशि में प्रवेश करता है और 5 नक्षत्रों (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती) से होकर गुजरता है. मई 2026 में हिंदू कैलेंडर का ज्येष्ठ माह रहेगा. इस महीने 10 मई से लेकर 14 मई तक पंचक रहेगा. रविवार को पंचक शुरू होने के कारण इसे रोग पंचक कहा जाएगा. अलग-अलग वार में शुरू होने वाले पंचक के नाम भी अलग-अलग होते हैं. मई महीने में लगने वाला पंचक 'रोग पंचक' रहेगा. रोग पंचक की शुरुआत रविवार 10 मई को दोपहर 12 बजकर 08 मिनट पर शुरू होगी और गुरुवार 14 मई को रात 10 बजकर 34 मिनट पर समाप्त हो जाएगी. क्या होता है रोग पंचक रोग पंचक को ज्योतिष में पंचक के पांच प्रकारों में सबसे संवेदनशील माना जाता है. क्योंकि रोग पंचक का संबंध सेहत, ऊर्जा और मानसिक संतुलन से होता है. रोग पंचक तब लगता है, जब चंद्रमा विशेष नक्षत्रों (धनिष्ठा से रेवती तक) में गोचर करता है.

मुहूर्त चिंतामणि ग्रंथ के अनुसार, पूर्वाभाद्रपद रोग कारक नक्षत्र है यानी इस नक्षत्र में बीमारी होने की संभावना अधिक होती है. पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान जयपुर जोधपुर के निदेशक और देश के जाने-माने प्रतिष्ठित ज्योतिषाचार्य डॉक्टर अनीष व्यास बताते हैं कि, रोग पंचक की अवधि में स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ सकती हैं, पुरानी बीमारी उभर सकती है या फिर मानसिक तनाव और थकान बढ़ने की संभावना अधिक रहती है. साथ ही रोग पंचक का समय शुभ कार्यों के लिए भी अच्छा नहीं माना जाता है. इसलिए रोग पंचक को अशुभ माना जाता है. इसलिए रोग पंचक के पांच दिनों की अवधि में आपको कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए. रोग पंचक से किन्हें अधिक खतरा! रोग पंचक की अवधि में वैसे तो सभी को सावधान रहने की जरूरत है. लेकिन कुछ लोगों पर इसका प्रभाव अधिक पड़ता है, इसलिए ये लोग सतर्क रहें. जिन्हें पहले से कोई गंभीर बीमारी हो, बुजुर्ग व बच्चे, मानसिक तनाव या एंग्जायटी से ग्रसित लोग और अधिक यात्रा या भागदौड़ करने वाले लोग रोग पंचक के दौरान सावधान रहें और अपना विशेष ध्यान रखें. रोग पंचक में वर्जित कार्य

घर का निर्माण न करें
दक्षिण दिशा की यात्रा न करें
शव दाह संस्कार में विशेष नियमों का पालन करें
लकड़ियों को इकट्ठा न करें
इसके अलावा रोग पंचक की अवधि में विवाह, सगाई, यात्रा, नामकरण, गृह प्रवेश या फिर नए व्यवसाय की शुरुआत भी नहीं करनी चाहिए.

रोग पंचक में क्या कर सकते हैं
भगवान विष्णु या शिव की पूजा करें.
"ॐ नमो नारायणाय" या "महामृत्युंजय मंत्र" का जाप करें.
गाय, पशु-पक्षियों और जरूरतमंदों को भोजन कराएं.
मानसिक और शारीरिक लाभ के लिए ध्यान और योग करें

जन्मपत्री में राजयोग ज्यादा हैं या कष्टयोग ? जानिए क्या है जन्मकुण्डली में बनने वाले शुभ-अशुभ योग

ज्योतिष शास्त्र के संदर्भ में अधिकतर लोग राजयोग को केवल सरकार से लाभ और अधिकार दिलवाने वाला योग ही समझते हैं, वास्तविकता में राजयोग किसी भी व्यक्ति को किसी भी क्षेत्र में उपलब्धि दिला सकता है, इसके लिए उस ग्रह की प्रवृत्ति एवं बल निर्णायक होता है। जरूरी नहीं है कि हर राजयोग व्यक्ति को राज्य सत्ता से ही जोड़े, राजयोग बनाने वाले ग्रह की प्रवृत्ति पर राजयोग का फल निर्भर करता है।

जन्मपत्री के गहन अध्ययन से यह पता चलता है कि कौन-सा ग्रह राजयोग बना रहा है, ग्रहों की प्रवृत्ति के अनुसार राजयोग जीवन के किसी भी क्षेत्र में व्यक्ति को विशेष अधिकार दिला सकते हैं। जन्मकुण्डली में योगकारक ग्रहों की आपस में युति भी कई राजयोगों का निर्माण करती है। मंदिर में भोग का जो महत्व है, वही महत्व जन्मकुण्डली में बनने वाले योग का होता है।

शुभ राजयोग कई श्रेणी के होते हैं, राजयोग, नीचभंग राजयोग, विपरीत राजयोग यानि जन्मपत्री में निर्मित ऐसे योग जो विपरीत परिस्थितियों के बाद शुभ फल प्रदान करते हैं, अतिविशिष्ट राजयोग जैसे, पंचमहापुरुष योग, अशुभ योगों में कालसर्प योग, केमद्रुम योग इत्यादि सर्वाधिक प्रचलित हैं। चन्द्रमा से बनने वाले अनफा- सुनफा योग भी विशेष महत्व रखते हैं।

सुनफा योग - यदि जन्मकुण्डली में चन्द्रमा से दूसरे भाव में सूर्य को छोड़कर कोई अन्य ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है। महर्षि पाराशर के अनुसार इस योग में जन्म लेने वाला जातक राजा अथवा राजा के समान होगा, उसकी स्वअर्जित सम्पत्ति होगी, जातक अपनी बौद्धिक क्षमता के कारण सम्मानित और प्रसिद्ध होगा, वह धनी और प्रतिष्ठित होगा।

अनफा योग - यदि चन्द्रमा से बारहवें भाव में सूर्य को छोड़कर कोई अन्य ग्रह हो तो अनफा योग बनता है। महर्षि पराशर के अनुसार अनफा योग में उत्पन्न व्यक्ति राजा होगा, रोग से मुक्त, सदाचारी, प्रसिद्ध, आकर्षक और सुखी होगा।

जिस प्रकार चन्द्रमा से सुनफा, अनफा, केमद्रुम योग इत्यादि बनता है, उसी प्रकार सूर्य से वेसि, वासि, उभयचारी, बुध आदित्य योग इत्यादि बनता है, जिनके बारे में भी जानना अति आवश्यक है।

श्री यंत्र को कैसे करें सक्रिय ? जानिए सबसे प्रभावशाली मंत्र, जप विधि और पूजा के जरूरी नियम

सनातन धर्म और तंत्र शास्त्र में श्री यंत्र को अत्यंत दिव्य और चमत्कारी यंत्र माना गया है. इस मंत्र को माता महात्रिपुरसुंदरी का स्वरूप कहा जाता है. मान्यता है, कि जिस स्थान पर विधिपूर्वक श्री यंत्र की स्थापना और पूजा की जाती है, वहां सुख-समृद्धि, मानसिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा का वास होता है. लेकिन केवल श्री यंत्र को घर में रखने से ही इसका पूरा लाभ नहीं मिलता है. इस मंत्र को जागृत या सक्रिय करने के लिए मंत्र साधना का विशेष महत्व बताया गया है.

श्री यंत्र को सक्रिय करने के लिए सबसे प्रभावशाली मंत्र यह माना जाता है:-
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः
यह मंत्र देवी ललिता त्रिपुरसुंदरी को समर्पित है और इसे श्रीविद्या साधना का अत्यंत महत्वपूर्ण मंत्र बताया गया है. इसके अलावा उच्च स्तर की साधना में पंचदशी और षोडशाक्षरी मंत्रों का भी प्रयोग किया जाता है, लेकिन इन्हें गुरु दीक्षा के बाद ही जपने योग्य माना गया है श्री यंत्र केवल एक ज्यामितीय (Geometric) आकृति नहीं, बल्कि देवी शक्ति का साकार रूप है. इसमें बने त्रिकोण, बिंदु, अष्टदल और षोडशदल ब्रह्मांड की विभिन्न शक्तियों का प्रतीक माने जाते हैं. जब साधक श्रद्धा और नियमपूर्वक मंत्र जप करता है, तब इन शक्तियों का जागरण धीरे-धीरे होने लगता है. यही प्रक्रिया श्री यंत्र के सक्रिय होने की मानी जाती है.

शास्त्रों के अनुसार "श्रीं", "ह्रीं" और "क्लीं" बीज मंत्र अत्यंत शक्तिशाली ध्वनियां हैं:
श्रीं को धन, समृद्धि और माता लक्ष्मी का बीज माना जाता है.
ह्रीं को शक्ति और आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक कहा गया है.
क्लीं आकर्षण और सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने वाला बीज मंत्र माना जाता है.
इन तीनों बीज मंत्रों के मेल से बना यह मंत्र साधक के मन, बुद्धि और वातावरण को सकारात्मक बनाने में मदद करता है.

श्री यंत्र को सक्रिय करने के लिए कुछ नियमों का पालन करना भी है जरूरी:
प्रतिदिन स्नान के बाद शुद्ध स्थान पर पूजा करें.
श्री यंत्र को पूर्व या उत्तर दिशा में स्थापित करें.
घी का दीपक और चंदन-अक्षत अर्पित करें.
कमलगट्टे या स्फटिक की माला से मंत्र जप करें.
मन को एकाग्र रखकर देवी ललिता का ध्यान करें.

श्री यंत्र की साधना से मन, बुद्धि और इंद्रियों पर नियंत्रण प्राप्त होता है, और साधक को धन, शांति, आरोग्य और आध्यात्मिक उन्नति की प्राप्ति होती है. यदि कोई व्यक्ति रोजाना नियमित रूप से 108 बार इस मंत्र का जप करें, तो व्यक्ति को मानसिक शांति, आत्मविश्वास और सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होने लगती है. कई लोग इसे आर्थिक उन्नति और कार्यों में सफलता से भी जोड़कर देखते हैं. हालांकि शास्त्रों में साफ कहा गया है कि, श्री यंत्र साधना का मतलब केवल धन प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मिक विकास और देवी कृपा प्राप्त करना भी है.

आर्थिक राशिफल:वृष-मिथुन राशि वालों को होगा धन लाभ, सिंह-कन्या के लिए खुलेंगे तरक्की के नए द्वार

मेष राशिः वृष राशि में मौजूद शुक्रदेव फाइनेंस में स्थिरता लाएंगे। आपको पहले की गई कोशिशों से लगातार इनकम या फायदा हो सकता है। ग्यारहवें घर में चंद्रदेव कॉन्टैक्ट या नेटवर्क के जरिए फाइनेंशियल लाभ दिलाने में मदद करेंगे। हालांकि, मेष राशि में मंगलदेव बिना सोचे-समझे खर्च करवा सकते हैं।

जल्दबाजी में फाइनेंशियल फैसले लेने से बचें। बचत और प्रैक्टिकल प्लानिंग पर ध्यान दें।

वृष राशि में शुक्रदेव फाइनेंशियल स्थिरता लाने और आराम दिलाने के मामले में सपोर्ट करेंगे। आपको भौतिक फायदे हो सकते हैं या लगातार इनकम मिल सकती है। हालांकि, बारहवें घर में मंगलदेव खर्च बढ़ा सकते हैं, खासकर गैर-जरूरी या बिना सोचे-समझे किए गए मामलों में। दसवें घर में चंद्रदेव करियर की कोशिशों से फाइनेंशियल फायदा दिला सकते हैं। ग्यारहवें भाव में शनिदेव लंबे समय तक फाइनेंशियल ग्रोथ में मदद करेंगे, लेकिन इसके लिए सब्र और डिसिप्लिन की जरूरत होती है। बचत पर ध्यान दें और रिस्की फाइनेंशियल फैसले लेने से बचें।

मिथुन राशि फाइनेंशियली यह दिन नेटवर्किंग और कॉन्टैक्ट्स से फायदा दिला सकते हैं। ग्यारहवें भाव के एक्टिवेट होने से इनकम बढ़ेगी। आपको प्रॉफिट या इंसेंटिव मिल सकते हैं। हालांकि, मंगलदेव बिना सोचे-समझे फाइनेंशियल फैसले लेने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। लिहाजा, रिस्की इन्वेस्टमेंट करने से बचें। वृषभ राशि में बारहवें भाव में शुक्रदेव होने से आराम या लग्जरी पर खर्च बढ़ सकते हैं। ऐसे में जरूरी है कि कमाई और खर्च के बीच बैलेंस बनाए रखें।

कर्क राशि आठवें भाव के असर से फाइनेंशियल मामले अनिश्चित लग सकते हैं। अचानक खर्च बढ़ सकते हैं या अचानक फाइनेंशियल बदलाव हो सकते हैं। हालांकि, ग्यारहवें भाव में शुक्रदेव नेटवर्क या दोस्तों के जरिए फायदा दिलाने में मदद करेंगे। आपको कनेक्शन के जरिए फाइनेंशियल मदद या मौके मिल सकते हैं। जोखिम भरे इन्वेस्टमेंट से बचें और ध्यान से फाइनेंशियल प्लानिंग पर ध्यान दें।

सिंह राशि फाइनेंशियली, आपका दिन स्थिर रहेगा। दसवें भाव में शुक्रदेव करियर या प्रोफेशनल कोशिशों से फायदा दिला सकते हैं। आपके काम की तारीफ हो सकती है या इनाम

मिल सकते हैं। हालांकि, मंगलदेव आपको यात्रा या कुछ नया सीखने से जुड़े हुए बिना सोचे-समझे खर्च करने के लिए मजबूर कर सकते हैं। आठवें घर में शनिदेव पैसे के मामलों में सावधानी बरतने की सलाह दे रहे हैं। जोखिम भरे निवेश से बचें और स्थिरता पर ध्यान दें।

कन्या राशि फाइनेंशियल तौर पर दिन मिले-जुले नतीजे ला सकता है। आठवें घर के एक्टिव होने से अचानक खर्च या अचानक पैसे के मामले आ सकते हैं। जोखिम भरे निवेश या सट्टेबाजी से बचें। हालांकि, नौवें घर में शुक्रदेव के होने की वजह से किस्मत का साथ मिलेगा। गाइडेंस या यात्रा से जुड़े मामलों के जरिए धन लाभ भी हो सकता है। ध्यान से प्लानिंग करने पर ध्यान दें और बिना सोचे-समझे पैसे के फैसले लेने से बचें।

तुला राशि फाइनेंशियल तौर पर दिन में सावधानी बरतने की जरूरत है। आठवें घर में शुक्रदेव उतार-चढ़ाव या छिपी हुई फाइनेंशियल समस्याएं ला सकते हैं। अप्रत्याशित खर्च सामने आ सकते हैं। पांचवें भाव में चंद्रदेव आपको सट्टेबाजी वाले निवेशों की ओर आकर्षित कर सकते हैं। मगर, जोखिम लेने से बचें। छठे भाव में शनिदेव अनुशासित वित्तीय योजना का समर्थन करेंगे। त्वरित लाभ के बजाय स्थिरता पर ध्यान दें।

वृश्चिक राशि आर्थिक रूप से दिन स्थिर रहेगा, लेकिन इस पर ध्यान देने की जरूरत है। छठे भाव में स्थित मंगलदेव स्वास्थ्य या दैनिक जरूरतों से संबंधित खर्च ला सकते हैं। अनावश्यक खर्च से बचें। सातवें भाव में स्थित शुक्रदेव साझेदारियों के माध्यम से वित्तीय लाभ ला सकते हैं। चौथे भाव में स्थित चंद्रदेव घर या सुख-सुविधाओं पर खर्च करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। सावधानीपूर्वक योजना बनाएं और संतुलन बनाए रखें।

धनु राशि आर्थिक रूप से आज के दिन संतुलन की जरूरत है। पांचवें भाव की सक्रियता आपको सट्टेबाजी वाले निवेशों की ओर आकर्षित कर सकती है। जोखिम लेने से बचें। छठे भाव में स्थित शुक्रदेव काम के माध्यम से स्थिर आय का समर्थन करेंगे। तीसरे भाव में स्थित चंद्रदेव संचार या छोटे प्रयासों के जरिये छोटे लाभ ला सकते हैं। जोश में आकर फैसले लेने की बजाय व्यावहारिक वित्तीय निर्णयों पर ध्यान दें।

मकर राशि आपके दूसरे भाव में स्थित चंद्रदेव वित्तीय योजना और जागरूकता का समर्थन करेंगे। आप बचत और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। हालांकि, चौथे भाव में स्थित मंगलदेव घर या संपत्ति से संबंधित खर्च ला सकते हैं। बिना सोचे-समझे वित्तीय फैसले लेने से बचें। पांचवें भाव में स्थित शुक्रदेव रचनात्मक प्रयासों के माध्यम से लाभ ला सकते हैं। त्वरित लाभ के बजाय लंबे समय की वित्तीय सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करें।

कुंभ राशि सरे भाव में स्थित शनिदेव अनुशासित वित्तीय योजना को प्रोत्साहित करेंगे। आप बचत और दीर्घकालिक स्थिरता पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। हालांकि, तीसरे भाव में स्थित मंगलदेव अल्पकालिक इच्छाओं पर बिना सोचे-समझे खर्च कर सकते हैं। आपके पहले भाव में स्थित चंद्रदेव भावनात्मक रूप से निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं। वित्तीय जोखिमों से बचें। सावधानीपूर्वक और व्यावहारिक वित्तीय प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करें।

मीन राशि वित्तीय मामलों के लिए यह अहम दिन है। द्वितीय भाव में मंगलदेव आपको धन कमाने और प्रबंधित करने की प्रेरणा देंगे। आप आर्थिक विकास की दिशा में साहसिक कदम उठा सकते हैं। हालांकि, जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचना चाहिए। बारहवें भाव में चंद्रदेव अप्रत्याशित खर्चों का कारण बन सकते हैं। प्रथम भाव में शनिदेव अनुशासन और दीर्घकालिक योजना को प्रोत्साहित करेंगे। त्वरित लाभ के बजाय बचत और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करें।

दुखों का अन्त तुरन्त, जानें क्या है त्रिविध ताप, मनुष्य को मिलता है तीन प्रकार का कष्ट

संसार में सुख चाहने वालों को आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक, तीन प्रकार के दुःख भोगने ही पड़ते हैं। आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक, ये त्रिविध प्रकार के दुःख कहलाते हैं। धर्मशास्त्रों में त्रिविध दुःखों को चर्चा की गई है, त्रिविध दुखों की निवृत्ति आवश्यक मानी गई है। इन तीन प्रकार के दुखों को समझना अतिआवश्यक है।

आध्यात्मिक दुःख शरीर और मन के भीतर उत्पन्न होने वाले दुखों को आध्यात्मिक दुःख कहते हैं, जैसे बीमारी, बुढ़ापा, मानसिक चिन्ता, काम, क्रोध, लोभ इत्यादि। मनुष्य को अपने शरीर तथा इन्द्रियों के सहयोग से शारीरिक रोग एवं मानसिक दुःख प्राप्त होता है, जिसकी निवृत्ति आवश्यक है।

आधिभौतिक दुःख जो दुःख बाहरी दुनिया के अन्य प्राणियों के द्वारा जैसे चोर, सर्प, हिंसक पशु, व्याघ्र आदि के द्वारा मनुष्य को प्राप्त होता है, उसे आधिभौतिक दुःख कहते हैं।

आधिदैविक दुःख भाग्य जनित कष्ट भी आधिदैविक दुःख कहलाता है, यह परेशानी उन बाहरी ताकतों से आती है, जिन्हें मनुष्य आसानी से दूर नहीं कर सकता है, जैसे प्राकृतिक आपदाऐं, बाढ़, भूकम्प, सूखा, आकाशीय बिजली या फिर

भाग्य जनित कष्ट, यानि अग्नि, वायु आदि प्राकृतिक तत्वों से जो दुःख होता है, वह इस श्रेणी में आता है।

त्रिविध ताप की निवृत्ति कैसे होती है जब मनुष्य ईश्वर की शरण, सत्संग, आत्मज्ञान, भक्ति और निष्काम कर्म का मार्ग अपनाता है, तब धीरे-धीरे इन तीनों तापों का प्रभाव कम होने लगता है। आत्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होने पर व्यक्ति बाहरी परिस्थितियों से कम विचलित होता है और भीतर शांति का अनुभव करता है। जिसे आत्मज्ञान और ईश्वर का आश्रय मिल गया, उसके लिए त्रिविध ताप भी शांति में परिवर्तित होने लगते हैं। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने त्रिविध ताप की निवृत्ति के विषय में कहा है, दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काहुहि ब्यापा।। सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।। यानि रामराज्य में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं व्यापते। सब मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में बताई हुई नीति मर्यादा में तत्पर रहकर अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं। कहा भी गया है, संसार में रहो लेकिन संसार को अपने अन्दर न रहने दो।

बैतूल में बेटे ने पिता की पत्थर मारकर हत्या की शराब के लिए पैसे न देने पर हुआ था विवाद, गिरफ्तार

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल जिले के खेड़ी पुलिस चौकी अंतर्गत चुनालोमा के पोहा ढाना में एक बेटे ने शराब के लिए पैसे न देने पर अपने पिता की पत्थर से हमला कर हत्या कर दी। पुलिस ने शनिवार को आरोपी बेटे को घटना के 24 घंटे के भीतर गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस के अनुसार, यह घटना शुक्रवार रात करीब 9 बजे हुई। आरोपी अनिल उइके (32) ने अपने पिता सत्तू उइके से शराब पीने के लिए पैसे मांगे थे। पिता द्वारा पैसे देने से इनकार करने पर दोनों के बीच विवाद शुरू हो गया। गुस्से में आकर अनिल ने पास पड़ा एक बड़ा पत्थर उठाकर पिता के सिर पर हमला कर दिया। गंभीर चोट लगने से सत्तू उइके की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद आरोपी अनिल मौके से फरार हो गया था।

शनिवार को गांव में सत्तू उइके का शव मिलने के बाद पुलिस को सूचना दी गई। सूचना मिलते ही खेड़ी चौकी और कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भिजवाया।

जांच के दौरान, संदेह के आधार पर बेटे अनिल उइके से पूछताछ की गई, जिसने अपना जुर्म कबूल कर लिया। इसके बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी का जिला चिकित्सालय में मेडिकल परीक्षण कराने के बाद उसे न्यायालय में पेश किया गया। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपी शराब का आदी है और अक्सर घर में पैसों को लेकर विवाद करता था।

महिला ने खाया जहर, अस्पताल में मौत,बैतूल में सिरहाने मिलि सल्फास की डिब्बी, देर रात तक घर आने पर पति से होता था विवाद

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल के आमला शहर के वार्ड नंबर-1 में एक महिला ने सल्फास खाकर आत्महत्या कर ली। प्रारंभिक जांच में पति-पत्नी के बीच विवाद और आर्थिक तंगी को आत्महत्या का कारण बताया जा रहा है। आमला थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है, घटना शनिवार रात की है। मृतका की पहचान वार्ड नंबर-1 निवासी नीलू नागले (30) पत्नी विजय नागले के रूप में हुई है। बताया गया है कि शनिवार रात नीलू ने अपने घर में जहरीले पदार्थ सल्फास का सेवन कर लिया, जिसके बाद देर रात उसकी तबीयत बिगड़ गई और उसकी मौत हो गई। सूत्रों के अनुसार, महिला के सिरहाने से सल्फास की एक डिब्बी भी मिली है। घटना की सूचना मिलते ही आमला थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सरकारी अस्पताल भिजवाया। थाना प्रभारी मुकेश ठाकुर ने बताया कि मृतका बर्तन मांजने का काम करती थी और अक्सर देर से घर लौटती थी। इसी बात को लेकर पति-पत्नी के बीच अक्सर विवाद होता था। घटना वाली रात महिला करीब 12:30 बजे अपने पति के पास से बच्चों को लेने पहुंची थी, जिसके बाद देर रात सल्फास खाने की बात सामने आई। मृतका का पति शहर के एक होटल में काम करता है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण भी घर में तनाव बना रहता था। हालांकि, पुलिस ने अभी आत्महत्या के कारणों को लेकर कोई स्थिति साफ नहीं की है। मृतका अपने पीछे दो छोटे बच्चों को छोड़ गई है। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की विस्तृत जांच शुरू कर दी है।

नलों में सूखा टैंकरों में मेहरबानी सलैया पंचायत में प्यासा जनमानस

जल आवर्धन योजना बनी चुनिंदा चेहरों की सुविधा, आम ग्रामीण बूंद-बूंद को मोहताज

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

भीषण गर्मी की तपती दोपहर में ग्राम पंचायत सलैया के ग्रामीण इन दिनों पानी नहीं,बल्कि व्यवस्था की संवेदनहीनता पी रहे हैं। जल आवर्धन योजना जो कभी गांव की प्यास बुझाने का सपना लेकर आई थी,अब आधे गांव तक पहुंचते-पहुंचते दम तोड़ती नजर आ रही है।हालात ऐसे हैं कि पंचायत का एक हिस्सा प्रतिदिन घंटों पानी से तर हो रहा है,तो वहीं बड़ा मोहल्ला मेड़ा मार्ग के लोग दो से तीन दिन के लंबे इंतजार के बाद महज आधे घंटे की जलधारा देखकर ही संतोष करने को मजबूर हैं।ग्रामीणों का कहना है कि कहीं नल झरने की तरह बह रहे हैं,तो कहीं बूंदों के लिए बाल्टियां तरस रही हैं।पंचायत की इस जल राजनीति ने लोगों के बीच आक्रोश की लहर पैदा कर दी है।सबसे ज्यादा सवाल उस व्यवस्था पर उठ रहे हैं, जहां पंचायत के सरपंच और सचिव जरूरतमंदों की बजाय रसूखदार लोगों के घरों तक टैंकरों से पानी पहुंचाने में व्यस्त बताए जा रहे हैं।गांव के आम लोग तपती धूप में खाली बर्तनों के साथ लाइन में खड़े हैं,जबकि प्रभावशाली परिवारों के आंगन में पानी की गाड़ियां दस्तक दे रही हैं।ग्रामीणों का तंज भी कम दिलचस्प नहीं है। यहां पानी भी अब पहचान देखकर बहता है।

सूखते ट्यूबवेल और बढ़ती निर्भरता : लगातार बढ़ती गर्मी और निजी ट्यूबवेलों के सूख जाने से ग्रामीण पूरी तरह जल आवर्धन योजना पर निर्भर हो चुके हैं।एक ओर आसमान से बरसात की उम्मीद है,तो दूसरी ओर पंचायत की कार्यप्रणाली पर सवालों की बरसात हो रही है।लोगों का कहना है कि बारिश आने में अभी वक्त है,लेकिन प्यास इंतजार नहीं करती।खबर छपी,पाइप पहुंचे लेकिन व्यवस्था नहीं सुधरी इससे पहले भी ग्राम पंचायत सलैया की जल समस्या को प्रमुखता से उठाया गया था। खबर प्रकाशित होने के बाद कुछ चुनिंदा घरों तक नल-जल योजना के पाइप जरूर पहुंचा दिए गए,मगर पूरी व्यवस्था को दुरुस्त करने की दिशा में कोई ठोस पहल नहीं हुई।यही कारण है कि पर्याप्त पानी उपलब्ध होने के बाद पंचायत के हर मोहल्ले तक समान रूप से जल आपूर्ति नहीं हो पा रही है।ग्रामीणों ने साफ शब्दों में चेतावनी दी है कि यदि जल्द व्यवस्था में सुधार नहीं हुआ, तो सोमवार को बड़ी संख्या में लोग सीएम हेल्पलाइन में शिकायत दर्ज कराकर निष्पक्ष जल वितरण और जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग करेंगे। सलैया की प्यास अब केवल पानी की नहीं, बल्कि न्यायपूर्ण व्यवस्था की भी होते जा रही है जो जिला जनपद पंचायत और लोक निर्माण विभाग के लिए एक चुनौती बती दिखाई दे रही है।

कोयलांचल की खामोश चीखें सूदखोरी के शिकंजे में दम तोड़ती ज़िंदगियां

पाथाखेड़ा और सारनी में दशकों से फल-फूल रहा ब्याज का काला कारोबार कर्ज़ के बोझ तले दबे लोग चुन रहे मौत का रास्ता

प्रमोद गुप्ता । सारनी

कोयलांचल और विद्युत नगरी सारनी की सरज़मीं पर सूदखोरी का स्याह कारोबार कोई नई दास्तान नहीं है।वर्ष 1962 में पीके-1 खदान से कोयला खनन की शुरुआत हुई और 1967 में सारनी ताप विद्युत गृह से बिजली उत्पादन का सिलसिला शुरू होते ही रोज़गार की तलाश में हजारों मजदूर यहां पहुंचे। मेहनतकश लोगों ने अपने घर-परिवार की गाड़ी चलाने के लिए रसूखदार साहूकारों से उधार लेना शुरू किया और तभी से ब्याजखोरी का यह ज़हरीला जाल इस औद्योगिक अंचल में अपनी जड़ें जमाता चला गया।

समय बदला,तौर-तरीके बदले,सूदखोरी के नाम और चेहरे भी बदले,लेकिन ब्याज का धंधा आज भी उसी बेरहमी से जारी है।कभी इसे मदद का नाम दिया गया,तो कभी सुविधा का,मगर हकीकत यह है कि कर्ज़ लेने वाला व्यक्ति धीरे-धीरे ऐसे दलदल में धंसता चला जाता है,जहां से लौटना लगभग नामुमकिन हो जाता है।

ब्याज की दरों को लेकर साहूकार और जरूरतमंद के बीच तालमेल नहीं बैठ पाता। नतीजा यह होता है कि मूल रकम से कई गुना अधिक पैसा वसूलने के बाद भी कर्जदारों को मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है।यही वजह है कि पाथाखेड़ा और सारनी क्षेत्र में कई लोग ब्याजखोरी के बोझ तले टूटकर आत्महत्या जैसा भयावह कदम उठा चुके हैं।

यह घटनाएं अखबारों में महज़ एक खबर बनकर रह जाती हैं।पाठक चाय की चुस्कियों के साथ इन्हें पढ़ते हैं,कुछ देर अफसोस जताते हैं और फिर रोजमर्रा की भागदौड़ में सब कुछ भुला दिया जाता है।मगर जिस इंसान ने फांसी का फंदा चुना,उसके पीछे छूटे परिवार की तबाही,बच्चों की बेबसी और रिश्तों का बिखराव शायद कभी सुर्खियां नहीं बन पाता।सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर ऐसा क्यों होता है कि पीड़ित व्यक्ति स्थानीय प्रशासन,पुलिस या समाज के जागरूक लोगों तक अपनी पीड़ा नहीं पहुंचा पाता क्यों वह मदद मांगने से पहले मौत को गले लगाने पर मजबूर हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो इस पूरे क्षेत्र पर किसी बेरहम सूदखोर की बददुआ का साया मंडरा रहा हो।कर्ज़ लेने वाला व्यक्ति अपनी हैसियत से कहीं ज्यादा रकम चुका देता है,लेकिन फिर भी सूद का सिलसिला खत्म नहीं होता। अंततः वह मरता क्या न करता की स्थिति में पहुंचकर सुसाइड नोट लिखता है,कुछ नाम छोड़ जाता है और हमेशा के लिए इस दुनिया को अलविदा कह देता है।मगर उसके जाने के बाद परिवार,समाज और प्रशासन के सामने जो सवाल खड़े होते हैं,उनका जवाब अक्सर अधूरा ही रह जाता है।बीते कुछ वर्षों में ऑनलाइन सट्टा और आईपीएल बेटिंग ने इस समस्या को और भयावह बना दिया है।पढ़े-लिखे और तकनीकी जानकारी रखने वाले लोग ऑनलाइन जुए के जाल में फंसकर कर्ज़ के ऐसे कुचक्र में घिर रहे हैं,जहां से निकलना उनके लिए मुश्किल हो जाता है।दूसरी ओर,गांव- कस्बों में मामूली सट्टा खेलने वाला अनपढ़ व्यक्ति शायद आर्थिक नुकसान तो उठाता है,लेकिन आत्महत्या जैसा कदम कम ही उठाता है।

जिला प्रशासन ने आत्महत्याएं रोकने के लिए कई प्रयास किए,जागरूकता अभियान चलाए,लेकिन ब्याजखोरी और ऑनलाइन जुए के कारण टूट चुकी मानसिक स्थिति को संभालना आसान नहीं रहा। यही कारण है कि सूदखोरी के इस गोरखधंधे में उलझा व्यक्ति धीरे-धीरे भीतर से खत्म होता जाता है और अंततः मौत को ही अपनी आखिरी मंज़िल मान बैठता है।आज जरूरत केवल खबरें छापने की नहीं,बल्कि समाज,प्रशासन और कानून को मिलकर इस अभिशाप के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ने की है,ताकि कोयलांचल और विधुत नगरी की गलियों में फिर किसी घर से मातम की आवाज़ न उठे।

घोघरी डैम का पानी ताप्ती बैराज पहुंचा

बैतूल को ढाई माह की राहत, अभी भी पेयजल संकट बरकरार

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल में भीषण गर्मी के बीच शहर की पेयजल व्यवस्था को मजबूत करने के लिए घोघरी डैम से छोड़ा गया पानी ताप्ती बैराज तक पहुंच गया है। नगर पालिका का दावा है कि इस पानी से शहर को लगभग ढाई माह तक राहत मिल सकेगी, लेकिन दूसरी ओर पानी की कमी और आपूर्ति व्यवस्था का संकट अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है।

22 किलोमीटर दूर बैराज तक पहुंचा पानी नगर पालिका द्वारा घोघरी डैम से लगभग आधा एमसीएम (मिलियन क्यूबिक मीटर) पानी छोड़ा गया था। यह पानी करीब 22 किलोमीटर का सफर तय कर बैराज तक पहुंचा है। अधिकारियों के अनुसार, गर्मी के मौसम

को देखते हुए पहले से ही पानी स्टोर करने की योजना बनाई गई थी, क्योंकि मई-जून में जलस्रोत तेजी से घटते हैं। पहले बैराज में मौजूद पानी से केवल 15 मई तक ही आपूर्ति संभव थी। घोघरी का पानी पहुंचने से अब अतिरिक्त राहत मिलने की उम्मीद जताई जा रही है, जिससे शहर की जल आपूर्ति की अवधि बढ़ गई है। नगर पालिका की टीम पानी की लगातार निगरानी और आपूर्ति व्यवस्था में जुटी हुई है। कुम्हली, नीलाधर और बलिराम ठाकरे सहित लगभग 60 कर्मचारियों की तीन टीमों ने पानी छोड़ने और उसकी निगरानी का काम संभाला। कमलेश, निलेश और महिला कर्मचारियों की भी ड्यूटी लगाई गई थी। पानी आने के बाद भी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ संकट हालांकि, घोघरी डैम से पानी आने के बावजूद शहर का पेयजल संकट पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। वर्तमान में नगर पालिका को कुल 7.50 एमएलडी (मिलियन लीटर प्रतिदिन) पानी ही मिल पा रहा है, जबकि एक दिन के अंतराल से आपूर्ति बनाए रखने के लिए 9 एमएलडी पानी की आवश्यकता है। इसका मतलब है कि प्रतिदिन लगभग 15 लाख लीटर पानी की कमी बनी हुई है। माचना एनीकट में बचा सिर्फ दो फीट पानी स्थिति यह है कि माचना एनीकट में केवल दो फीट पानी बचा है और अगले कुछ दिनों में इसके खत्म होने की आशंका जताई जा रही है। फिलहाल ताप्ती नदी से आने वाले पानी से फिल्टर प्लांट की टंकियां भरी जा रही हैं और बचा हुआ पानी माचना नदी में छोड़ा जा रहा है, ताकि जलस्तर बना रहे। बंद पड़े 35 ट्यूबवेल फिर से किए शुरू नगर पालिका में पेयजल व्यवस्था संभाल रहे धीरेन्द्र राठौर ने बताया कि बंद पड़े 35 ट्यूबवेल भी दोबारा शुरू किए गए हैं। इसके अलावा अधिग्रहित बोरवेल और कुओं से भी पानी लिया जा रहा है, ताकि शहर की पेयजल जरूरतों को पूरा किया जा सके।

टाहली-कुमली मोड़ पर सड़क हादसा, बुजुर्ग की मौत

बैतूल में पारिवारिक कार्यक्रम में शामिल होने गए थे, 3 लोग घायल

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल के चिचोली थाना क्षेत्र में रविवार को टाहली-कुमली मोड़ पर सड़क हादसे में 62 वर्षीय बुजुर्ग की मौत हो गई, जबकि तीन लोग घायल हो गए। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। सूचना मिलते ही पुलिस पहुंची और घायलों को अस्पताल भिजवाया। मृतक की पहचान लीलाधर ठाकरे पिता बलीराम ठाकरे निवासी सुहागपुर के रूप में हुई है, जो वर्तमान में अंबाड़ा में रह रहे थे। जानकारी के अनुसार, वे ग्राम टाहली में एक पारिवारिक कार्यक्रम में शामिल होने

पहुंचे थे। इसी दौरान टाहली-कुमली मोड़ के पास हादसा हो गया। गंभीर हालत में लीलाधर ठाकरे को जिला अस्पताल बैतूल लाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। हादसे में कमलेश देशमुख पिता बाहवराव देशमुख, नीलेश बोड़खे पिता कृष्णा बोड़खे और उषा देशमुख पति कमलेश देशमुख घायल हुए हैं। तीनों का जिला अस्पताल में उपचार जारी है।

पुलिस ने शुरू की जांच घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। फिलहाल हादसे के कारण स्पष्ट नहीं हो सके हैं। पुलिस आसपास के लोगों से पूछताछ कर दुर्घटना के कारणों का पता लगाने में जुटी है। रविवार को जिला अस्पताल में मृतक का पोस्टमार्टम कराया गया। इसके बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949